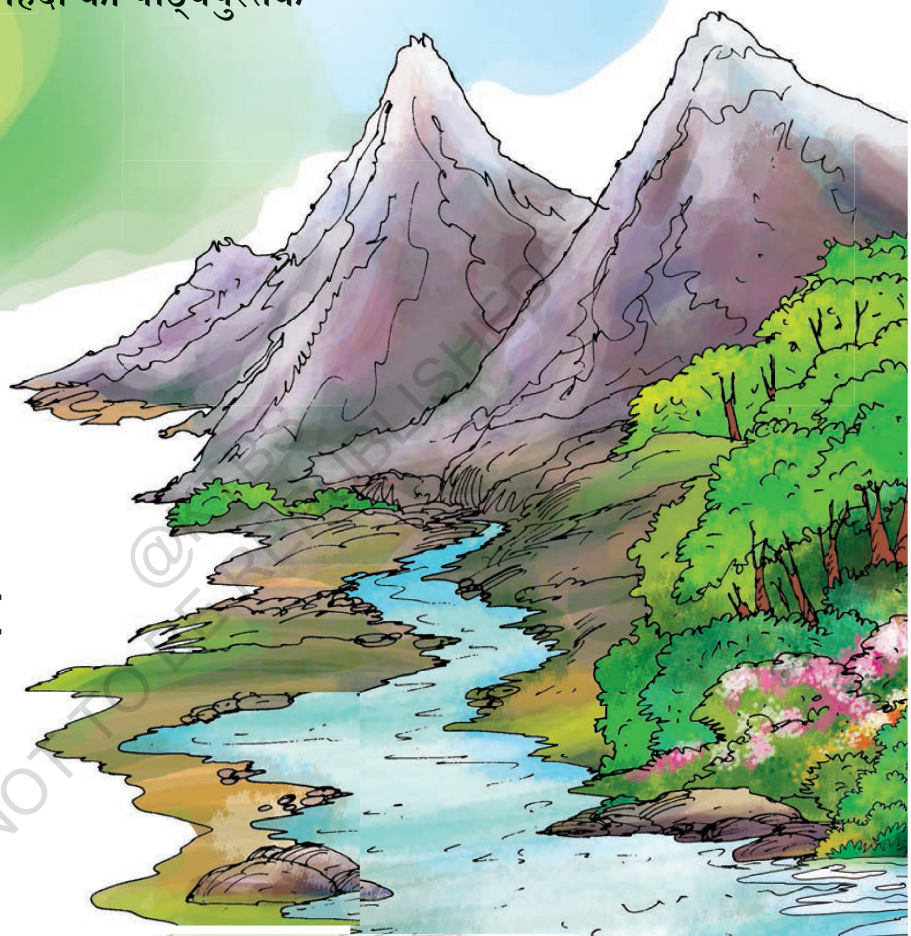
Government of Karnataka

मल्हार

कक्षा 8 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



8

Part - I

0871

NOT TO BE REPUBLISHED © KSTBS

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Karnataka Textbook Society (R.)
6th Cross, Malleshwaram, Bengaluru-560 003

0871 – मल्हार
कक्षा 8 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5729-360-0

प्रथम संस्करण
जून 2025 आषाढ़ 1947

PD 1000T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

रा.शै.अ.प्र.प. 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा क्राउन प्रिंटर्स, बी-20/1, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108 ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम.वी. श्रीनिवासन*

मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : *जहान लाल*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*

उत्पादन अधिकारी : *दीपक जैसवाल*

आवरण

बैनियन ट्री

चित्रांकन एवं ले-आउट

जोएल गिल

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा सन्निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। यह दूरदर्शी परिप्रेक्ष्य विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में सभी स्तरों और पाठ्यचर्या क्षेत्रों में समाहित है। बुनियादी और प्रारंभिक स्तर मानवीय अस्तित्व के पंचकोशों को दृष्टिगत रखते हुए विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं को संपोषित करते हैं। इससे मध्य स्तर पर उनके अधिगम प्रतिफलों की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों के मध्य एक सेतु का कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है— विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए कुशल बनाएँ। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषय सम्मिलित किए गए हैं जो बच्चों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के मध्य इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी— ऐसी निर्णायक भूमिका जो बच्चों की जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं तत्परता भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें निर्मित करने हेतु एक प्रतिबद्ध संस्था है। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों को समितियों में सम्मिलित किया जाता है। कक्षा 8 के लिए निर्मित *मल्हार* पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं। इन विधाओं के अंतर्गत चयनित रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण विज्ञान, कला, इतिहास, खेल और भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समन्वयन और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इसमें दी गई गतिविधियाँ और प्रश्न-अभ्यास विद्यार्थी स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है, अपितु यह अत्यंत महत्वपूर्ण भी है, क्योंकि इससे बच्चों का बहुआयामी विकास होता है। साथ ही सीखने की प्रक्रिया रोचक ही नहीं अपितु आनंदमय और सहज हो जाती है। इस बहुआयामी पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त इस स्तर पर विद्यार्थियों को अन्य विभिन्न शिक्षण संसाधनों की जानकारी प्राप्त करने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों इस हेतु मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने हेतु वचनबद्ध है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जो भावी संशोधनों में सहायक हो सकते हैं।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
30 *मई* 2025

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

यह पुस्तक

संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। किसी भी नागरिक से क्या-क्या अपेक्षाएँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखते हुए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी चरणों में भाषा शिक्षण के मुख्य लक्ष्य इस तरह से रेखांकित किए जा सकते हैं— सृजनशीलता, ज्ञान परंपरा और प्रयोग, स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतन, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, स्वास्थ्य एवं खुशहाली। भाषा की सृजनशीलता से आशय है कि विद्यार्थियों में भाषा के संवादधर्मी स्वरूप के रचनात्मक पक्ष के प्रति समझ बने और वे विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निर्मितियों के अनुरूप भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकें। विद्यार्थी अपनी बात को अपने ढंग से कह सकें, अपनी स्वाभाविक सृजनशीलता एवं कल्पना को पोषित कर सकें। ज्ञान-परंपरा और उसका वर्तमान संदर्भ में प्रयोग भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसमें परंपरागत ज्ञान और उसका अभिनव प्रयोग सम्मिलित है, जिससे विद्यार्थियों में अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के प्रति विवेकपूर्ण सुरुचि पैदा हो सके। भाषा पढ़ने-पढ़ाने का लक्ष्य यह भी है कि विद्यार्थी स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतक बनें। साथ ही साथ, वर्तमान और अतीत की घटनाओं का तार्किक विश्लेषण कर सकें। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास को ध्यान में रखते हुए परिवेशीय सजगता व आत्मीय संबद्धता का भाव पैदा हो, जो भारतीय सभ्यता और अस्मिता निर्माण की बहुविध रंगतों की सतत निर्मिति है। भाषा को समझने की क्षमता विकसित करना व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करना भी है। स्वास्थ्य एवं खुशहाली से आशय है कि विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्फूर्त हों, उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण व आदतों का विकास हो और भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्वता आए।

कक्षा 8 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार* आपकी कक्षा 6 और 7 के अंतर्गत सम्मिलित विषयगत, भाषिक और विविधविषयी समझ को और सुदृढ़ करने में सहयोगी होगी। यह पुस्तक आज के विद्यार्थियों, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। हमारे विद्यार्थी अपने आस-पास के समाज, अपने महान राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को समझ सकें। भारत की लोकतांत्रिकता, प्रेम, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण, जेंडर समानता, वसुधैव कुटुंबकम्, शांति और सहिष्णुता की हजारों वर्ष पुरानी परंपराओं और विरासत को आगे बढ़ा सकें और अपने दैनिक जीवन में हिंदी का आत्मविश्वासपूर्वक उपयोग कर सकें, इसके लिए पुस्तक में पर्याप्त सामग्री दी गई है। सामग्री चयन में भारत के विभिन्न राज्यों, कलाओं, विविध परिवेशों का भी समावेशन किया गया है।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक प्रसिद्ध रचनाओं को सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य के गौरवशाली और समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें और एक जागरूक पाठक बनने की दिशा

NOT TO BE REPUBLISHED

में अग्रसर हो सकें। कक्षा 8 के लिए निर्मित इस पुस्तक में पत्र विधा भी सम्मिलित की गई है। इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात को ध्यान में रखा गया है कि यह आज के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम, आत्मविश्वास से पूर्ण और चिंतनशील नागरिक के निर्माण में सहायक हो सके।

इस पुस्तक का पूर्ण क्षमताओं के साथ उपयोग करने के लिए अध्यापकों को इसके निम्नलिखित पक्षों के बारे में जान लेना उपयोगी रहेगा—

बहुभाषिकता हमारे देश की अनूठी विशेषता और ताकत है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता के कई स्वरूप मिलेंगे— विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भारतीय भाषाओं की एकात्मकता, विभिन्न साहित्यिक अभिव्यक्तियों या विषयों का समन्वय, हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, अनुवाद में भाषाएँ आदि। अपेक्षा है कि पढ़ने-पढ़ाने के संदर्भ में बहुभाषिक स्रोतों या संदर्भों को एक ताकत और अवसर की तरह प्रयोग किया जा सके।

पुस्तक के चित्र रचनाओं को समृद्ध करने के दृष्टिकोण से दिए गए हैं। ये पाठ के संदर्भों को नए विस्तार और आयाम देते हैं तथा समझने-समझाने की प्रक्रिया को आसान बनाते हैं। इन चित्रों पर बातचीत, लेखन और अन्य गतिविधियों के लिए सुझाव पुस्तक में यथास्थान दिए गए हैं। अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वयं भी अनेक गतिविधियों की रचना की जा सकती है।

पुस्तक में संदर्भ के अनुसार व्याकरण की स्तरानुकूल अवधारणाएँ सम्मिलित की गई हैं। भाषा संबंधी अवधारणाओं को और गहन स्तर पर समझने के अवसर इस पुस्तक में दिए गए हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कक्षा-स्तर पर व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को परिभाषाओं को याद करवाना न होकर उन्हें दैनिक जीवन में भाषा का प्रभावशाली उपयोग कर सकने में सक्षम बनाना है। विद्यार्थियों का भाषाई प्रयोगों पर ध्यान जाए, उनका शब्द-भंडार विकसित हो, वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनुकूल और संगत भाषा का प्रयोग कर सकें, इसके लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

पाठों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है ताकि विद्यार्थी इस पुस्तक को एक साथी, मित्र और अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में देख सकें। इसलिए यह पुस्तक अनेक स्थानों पर पाठकों से वार्तालाप करती हुई प्रतीत होती है। यह संवादात्मक शैली पुस्तक को सहज, सरल और उपयोगी बनाने में सहायक है। यही सहजता पुस्तक के अभ्यासों में भी दिखाई देती है।

मौलिक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर पुस्तक के अनेक प्रश्नों में विद्यार्थियों को उनके अपने विचारों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के अवसर दिए गए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुना जाए। भले ही किसी विद्यार्थी के विचार सबसे अलग हों, फिर भी तर्कों और उदाहरणों द्वारा उसे उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करना आवश्यक है।

पठन के तरीके को विस्तार देते हुए पुस्तक में दिए गए पाठ कई प्रकार के हैं। यह पुस्तक फिल्म, चित्रात्मक सूचना, पोस्टर, विज्ञापन आदि सभी को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाती है। सभी के पढ़ने के अलग-अलग तरीके होते हैं। पठन विस्तार की दृष्टि से पुस्तकालय, वेबलिंक इत्यादि की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।

पुस्तक में अनेक रोचक समावेशी गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों को उनमें से कुछ गतिविधियों को अकेले करना होगा, कुछ को अपने समूह में और कुछ को पूरी कक्षा को मिलकर करना होगा। पुस्तक की अनेक गतिविधियों को करने के लिए विद्यार्थियों को अपने समूह के साथ चर्चा करनी होगी। इसके लिए

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

आवश्यक है कि समय-समय पर कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। एक समूह में 4 से 8 विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कक्षा में विशेष रूप से सक्षम (शारीरिक या मानसिक) विद्यार्थी हैं तो वे भी इन्हीं समूहों में होने चाहिए। अभ्यास को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि सभी तरह के विद्यार्थी (विशेष आवश्यकता वाले बच्चों) उसे करने में सक्षम होंगे।

पुस्तक के प्रत्येक प्रश्न के साथ एक चित्रात्मक संकेत (आइकन) दिया गया है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि उस प्रश्न में उन्हें क्या करना है— चर्चा करनी है, लिखना है, बोलकर उत्तर देना है या कोई गतिविधि करनी है। इसलिए सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को इन चित्र-संकेतों के अर्थ और उपयोग समझा दें।

हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना एक महत्वपूर्ण कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए पुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी कक्षा 8 में भी हिंदी शब्दकोश का उपयोग करने के कौशल का विकास जारी रखें। इस शब्दकोश में पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए ऐसे शब्दों को स्थान दिया गया है जो कक्षा 8 के अधिकांश बच्चों के लिए नए या अपरिचित हो सकते हैं। शब्दकोश के साथ हिंदी वर्णमाला और देवनागरी लिपि के भारतीय ब्रेल रूप 'भारती' को भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी देवनागरी के ब्रेल रूप के प्रति जागरूक हो सकें।

पुस्तक/पाठ की संरचना

भाषा संगम— इसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं की कुछ झलकियाँ हिंदी के माध्यम से देने का प्रयास किया गया है। भारतीय भाषाओं के महत्वपूर्ण लेखन से जुड़ना विद्यार्थियों को भाषाओं के साथ-साथ विविध संस्कृति एवं समाज को जानने-समझने के प्रति उत्सुक बनाएगा।

पाठ— सबसे पहले पाठ का शीर्षक, पाठ संख्या और मूल पाठ दिया गया है। कहीं-कहीं निबंध या पाठों में आवश्यकतानुसार पाठ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाकार से परिचय— रचना के अंत में रचनाकार का चार-पाँच पंक्तियों में स्तरानुरूप सरल और सरस सृजनात्मक परिचय दिया गया है। ये परिचय सूचनात्मक न होकर सृजनात्मक लेखन के उदाहरण हैं ताकि विद्यार्थियों को परिचय लेखन के विविध रूपों और सृजनात्मक लेखन का आनंद लेने के अवसर मिल सकें। यह परिचय लेखक की जीवनी न होकर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के किन्हीं विशेष पक्षों का रोचक वर्णन है। इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह परिचय विद्यार्थियों के औपचारिक (लिखित) आकलन की प्रक्रिया का अंग नहीं है।

गतिविधियाँ और अभ्यास— पाठ और रचनाकार के परिचय के बाद गतिविधियाँ और अभ्यास दिए गए हैं। इन्हें 'सीखने की प्रक्रिया' के अंग के रूप में दिया गया है। ये गतिविधियाँ 'सीखने का आकलन' न होकर 'सीखने के लिए आकलन' सिद्धांत पर आधारित हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को पाठ को समझने में, उसे अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने में और अपनी भाषाई कुशलताओं को प्रखर करने में सहायता मिलेगी। इन अभ्यासों में अनेक स्थान पर विद्यार्थियों के लिए संकेत भी दिए गए हैं जिनसे उन्हें चर्चा करने और अपने मौलिक उत्तरों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। यहाँ कई प्रश्न ऐसे हैं जिनके एक से अधिक उत्तर हो सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी का अनुभव और कल्पना अन्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती है। अपेक्षा है कि आप मौलिक उत्तरों का कक्षा में स्वागत करें और कक्षा में उनकी सराहना की जाए।

© NCERT not to be republished

मेरी समझ से— इस गतिविधि में विद्यार्थियों को चार-पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों को हल करने के अवसर दिए गए हैं। ये प्रश्न इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके उत्तर चुनने के लिए विद्यार्थियों को पूरे पाठ को समझने के अपने कौशलों को प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। हो सकता है कि किसी प्रश्न के लिए विद्यार्थी अपनी समझ से अलग-अलग विकल्प चुन लें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को अपने उत्तर को चुनने के कारण स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ताकि उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल, तर्क करने, उदाहरण देने, सुनने और उसका विश्लेषण करने जैसे महत्वपूर्ण भाषाई कौशलों का विकास हो सके। इस चर्चा के आधार पर विद्यार्थी एक सर्वसम्मत विकल्प के चयन तक पहुँचने में सक्षम हो सकेंगे।

मिलकर करें मिलान— प्रत्येक पाठ में कुछ ऐसे संदर्भ सम्मिलित रहते हैं जो उस पाठ को और समृद्ध बना देते हैं। उदाहरण के लिए, 'हरिद्वार' शीर्षक पत्र में मसाले, पुराण और कुछ स्थानीय संदर्भ आए हैं। यदि विद्यार्थी पाठ में आए ऐसे संदर्भों पर ध्यान दे सकें तो वे पाठ को भली प्रकार समझ सकेंगे। इसलिए इस अभ्यास में पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों को दिया गया है जिनका अर्थ या संदर्भ जानना-समझना पाठ को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। कक्षा 8 के लिए ऐसे पाठ संदर्भों या कविता के अर्थों आदि को समझने का अवसर भी इसके अंतर्गत दिया गया है। इनकी व्याख्या भी दी गई है। विद्यार्थियों को इन शब्दों को उनके संदर्भों से मिलान करना है। यह कार्य वे स्वयं, शिक्षकों, अभिभावकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से कर सकेंगे।

पंक्तियों पर चर्चा— इस गतिविधि में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इन पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और इन पर विचार करें। उन्हें इनका क्या अर्थ समझ में आया, उन्हें अपने विचार अपने समूह में साझा करने हैं और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखना है। इस प्रकार इस गतिविधि में उन्हें सुनने, बोलने और लिखने-पढ़ने के भरपूर अवसर मिलेंगे।

सोच-विचार के लिए— इस गतिविधि में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे पाठ पर आधारित बोध-प्रश्नों पर स्वयं सोच-विचार करेंगे और स्वतंत्र रूप से उनके उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख सकेंगे। आवश्यकता होने पर इस कार्य में भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन और सहयोग अपेक्षित है।

साहित्य की रचना— इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। हो सकता है, इसके लिए उन्हें पाठ को पुन: ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव हो। उन्हें पाठ की जो बातें विशेष लगेंगी, उन्हें वे आपस में साझा करेंगे और लिख लेंगे। इस प्रकार पूरी कक्षा की एक विस्तृत सूची तैयार हो जाएगी। उदाहरण के लिए, संभव है कि कविताओं में वे अलंकारों की शब्दावली या नामों के परिचय के बिना भी पहचान कर लें कि इस पंक्ति में तीन-चार शब्द एक ही अक्षर से शुरू हो रहे हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहाँ इस गतिविधि में भी एक-दो उदाहरण दिए गए हैं।

अनुमान और कल्पना से— इस गतिविधि में पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर पाठ में सीधे-सीधे नहीं मिलेंगे। इनके उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थियों को पाठ के संदर्भों, अपनी कल्पना और अनुमान का सहारा लेना होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगे। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के मौलिक चिंतन को खुला आसमान भी देती हैं।

शब्दों की बात— विद्यार्थियों का शब्द-भंडार बढ़ाना और भाषा और शब्दों का सार्थक उपयोग करने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। इसी दृष्टिकोण से यहाँ शब्दों

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। यहाँ संदर्भगत व्याकरण की भी कुछ स्तरानुकूल अवधारणाएँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

आपकी बात— जब हम किसी साहित्यिक रचना को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं तो वह भी हमारे जीवन और अनुभव संसार का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस प्रश्न के अंतर्गत पाठ के संदर्भों को अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने के अवसर दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे और इससे उनका भाषा की कक्षा से जुड़ाव और प्रबल हो सकेगा। यह प्रश्न मौखिक रूप से चर्चा और संवाद को कक्षा में स्थान देने की दिशा में एक और प्रभावशाली कदम है।

आज की पहेली— पहेलियाँ किसी भी भाषा के मौखिक और लिखित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये समाज, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग होती हैं। पहेलियाँ बच्चों को भाषा का सार्थक संदर्भों में उपयोग करने के अद्‌भुत और रोचक अवसर देती हैं। भारत की प्रत्येक भाषा के पास पहेलियों की अनूठी धरोहर और संपदा उपलब्ध है। इसी संपदा को हमारे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के दृष्टिकोण से पाठ में एक अनोखी और रोचक पहेली को हल करने का अवसर विद्यार्थियों को दिया गया है। इससे उन्हें स्वयं भी पहेलियों की रचना करने, उन्हें बूझने और उनका आनंद उठाने के अनुभव प्राप्त हो सकेंगे। ये पहेलियाँ एक बार फिर चित्रों, रचनाओं या फिर अपने परिवेश को पुन: देखने-सुनने का अवसर भिन्न तरीके से देती हैं।

झरोखे से— भाषा की पुस्तक विद्यार्थियों को साहित्य की झलक दिखाने का अपने आप में एक माध्यम है। यह झलक जितनी समृद्ध हो सके, उतना विद्यार्थियों के भाषाई विकास के लिए अच्छा होगा। भाषा की पाठ्यपुस्तक की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें असीमित सामग्री को स्थान नहीं दिया जा सकता। इसी सीमा को कुछ असीम बनाने का प्रयास है 'झरोखे से'। यहाँ पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर इन झरोखों के माध्यम से साहित्य, कक्षा और विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश पा सकेगा।

साझी समझ— झरोखे में दी गई रचनाओं को पढ़ने के बाद विद्यार्थी अवश्य ही उनके बारे में अपने विचार साझा करना चाहेंगे। गतिविधियों का यह भाग— 'साझी समझ' ऐसे अवसर देता है। इसके अंतर्गत 'झरोखे से' में दी गई रचनाओं के किसी विशेष पक्ष या पूरी रचना पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करेंगे और उसे कक्षा में सबके साथ साझा करेंगे।

खोजबीन के लिए— पाठों से जुड़ी कुछ सामग्री (ऑडियो, वीडियो या प्रिंट के रूप) के लिंक खोजबीन के लिए दिए गए हैं ताकि विद्यार्थियों के पठन का विस्तार हो सके और साथ ही रचनाओं के प्रति उनकी समझ समृद्ध हो।

पुस्तक को शिक्षण का आधार बनाते समय यह ध्यान देना होगा कि भाषा का परिदृश्य समय के साथ-साथ तीव्रता से बदल रहा है। भाषा के स्वरूप, उसके अध्ययन के उद्देश्य तथा शिक्षण के तौर-तरीकों से लेकर आकलन की पद्धतियों तक में नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण की पद्धतियों में नवीनता, विविधता व विस्तार लाने की आवश्यकता है। आज भाषा की कक्षा केवल चहारदीवारी या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि घर-परिवार, परिवेश, इंटरनेट और मीडिया के माध्यम से उसका विस्तार दूर तक हो चला है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के संदर्भ में इस

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

विस्तार को समझने तथा इसके विविध आयामों को एक-दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। भाषा-शिक्षण के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भाषा ज्ञान की सतत प्रक्रिया हमारे पूरे परिवेश (जिसमें घर, पास-पड़ोस, सामाजिक समुदाय तथा विद्यालय सभी सम्मिलित हैं) में चलती रहती है। यदि हम भाषा की कक्षा को बाहरी परिवेश में उपलब्ध सीखने के अवसरों से सीधे जोड़ सकें तो भाषा-शिक्षण के लक्ष्यों को बखूबी प्राप्त किया जा सकता है।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
सदस्य समन्वयक, पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह, हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति
(एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी **(सह-अध्यक्ष)**

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं *शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

अध्यक्ष

सुरेंद्र दुबे, *उपाध्यक्ष*, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *टी.जी.टी.* हिंदी, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, पी.जी.टी. हिंदी (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नई दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्राचार्य* (अवकाश प्राप्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

श्याम सिंह सुशील, *लेखक*, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली

शिव शरण कौशिक, *प्रोफेसर* हिंदी (अवकाश प्राप्त), राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान

सरिता चौधरी, *असिस्टेंट प्रोफेसर,* डी.ई.पी.एफ.ई., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (भाषा विज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया, वसंती भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (भाषा) के सभी सदस्यों तथा अन्य अंत:संबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

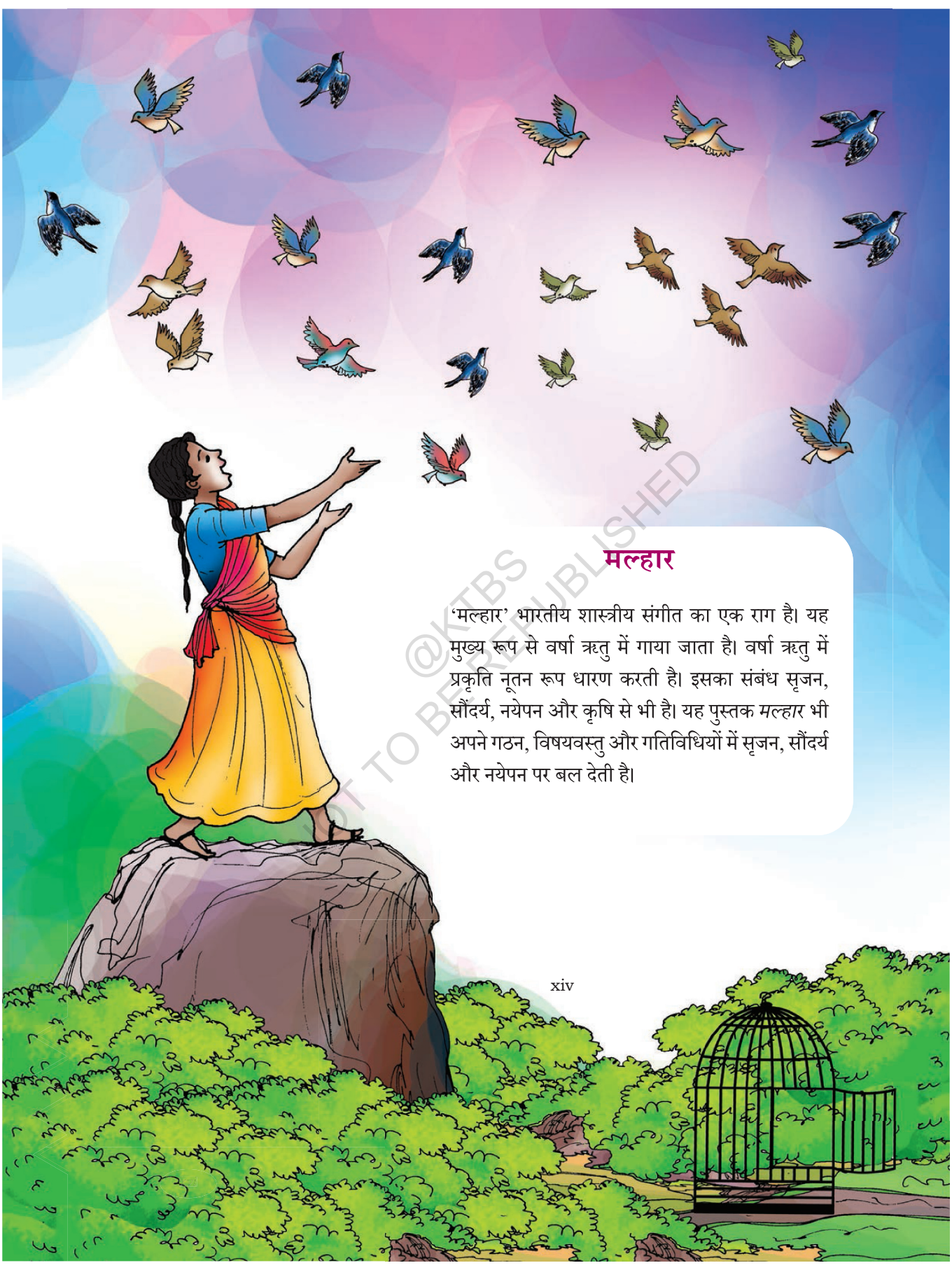
परिषद्, *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान; *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही इन विभागों के सदस्यों का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के अंत:संबंध को सुनिश्चित करने के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, सुनीत मिश्र, *वरिष्ठ शोध सहायक*; प्रिया, सत्यम सिंह और अरुण कुमार, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*; सोनम सिंह, *प्रूफरीडर* और तकनीकी सहयोग हेतु फरहीन फातिमा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, इस पुस्तक के संपादन कार्य के लिए प्रकाशन प्रभाग में कार्यरत दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); कहकशा, *सहायक संपादक* (संविदा); प्रूफरीडिंग के लिए राहिल अंसारी, *प्रूफरीडर* (संविदा); आफरीन, *प्रूफरीडर* (संविदा) के प्रति आभार व्यक्त करती है और इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी,* डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* शिवशंकर दुबे के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



मल्हार

'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। यह मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में गाया जाता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति नूतन रूप धारण करती है। इसका संबंध सृजन, सौंदर्य, नयेपन और कृषि से भी है। यह पुस्तक *मल्हार* भी अपने गठन, विषयवस्तु और गतिविधियों में सृजन, सौंदर्य और नयेपन पर बल देती है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



विषय-क्रम

आमुख			iii
यह पुस्तक			v
भाषा संगम *(उड़िया कविता का हिंदी अनुवाद)*			xvi
1.	स्वदेश (कविता)	*गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'*	1
2.	दो गौरैया (कहानी)	*भीष्म साहनी*	13
	मित्र लाभ (पढ़ने के लिए)		
3.	एक आशीर्वाद (कविता)	*दुष्यंत कुमार*	36
4.	हरिद्वार (पत्र)	*भारतेंदु हरिश्चद्र*	45
5.	कबीर के दोहे (दोहा)	*कबीर*	63
	कदम मिलाकर चलना होगा (पढ़ने के लिए)	*अटल बिहारी वाजपेयी*	
	शब्दकोश		76
	'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती		85
	पहेलियों के उत्तर		86

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

मातृभूमि

जिस उम्र में बच्चा
जाता है घूमने
पड़ोसियों के घर,
समझता है तब
बाकी के सारे घर हैं
उसके संगी-साथियों के।

बाद में जब अपने टोले से
जाता है घूमने
दूसरे टोलों में
तब वह पड़ोसियों के टोलों को
अपना ही समझता है।

दूसरे गाँवों में जाता है जब
अपने गाँव से बाहर
समझता है शायद
जहाँ घर है अपना
वही गाँव है उसका।

अपने गाँव के नदी, तालाब
सारे बाग-बगीचों को
समझता है अपना ही
और उन सबको मानता है सुंदर।

बड़े होकर जब करता है
सैर दूसरे राज्यों में
बखानता है वहाँ
अपने राजा और
राज्य के लोगों का बड़प्पन।

हाथी, घोड़ों से लेकर
भेड़, बकरियों तक
सब अच्छे हैं उसके राज्य में,
सारे सुखों का वास है
उसके ही राज्य में।

और बड़े होने पर
जब जाता है वह विदेश
स्वर्ग से भी सुंदर समझता है तब
जिस देश में है उसका घर।

ज्ञान के बल पर
जानता है जब
सबके जनक हैं जगतपति,
धरती के सभी लोगों को तब
समझता है अपना भाई।

तब वह जानता है
करता है वह जितना
लोगों का उपकार,
विश्वपति के विश्वसदन का है वह
उतना ही योग्य संतान।

इसी रूप में ग्रामकथा, राज्यकथा,
देशकथा, विश्वकथा
मानव जीवन में प्रतीत होना
दिखता है सर्वथा।

मातृभूमि, मातृभाषा की ममता
जिसके हृदय नहीं जनमी,
उन्हें अगर ज्ञानियों में गिनेंगे
तो फिर जाएगा अज्ञान कहाँ।

— *गंगाधर मेहेर*
(अनुवाद— राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

@KTPS NOT TO BE REPUBLISHED

1 स्वदेश

0871CH01

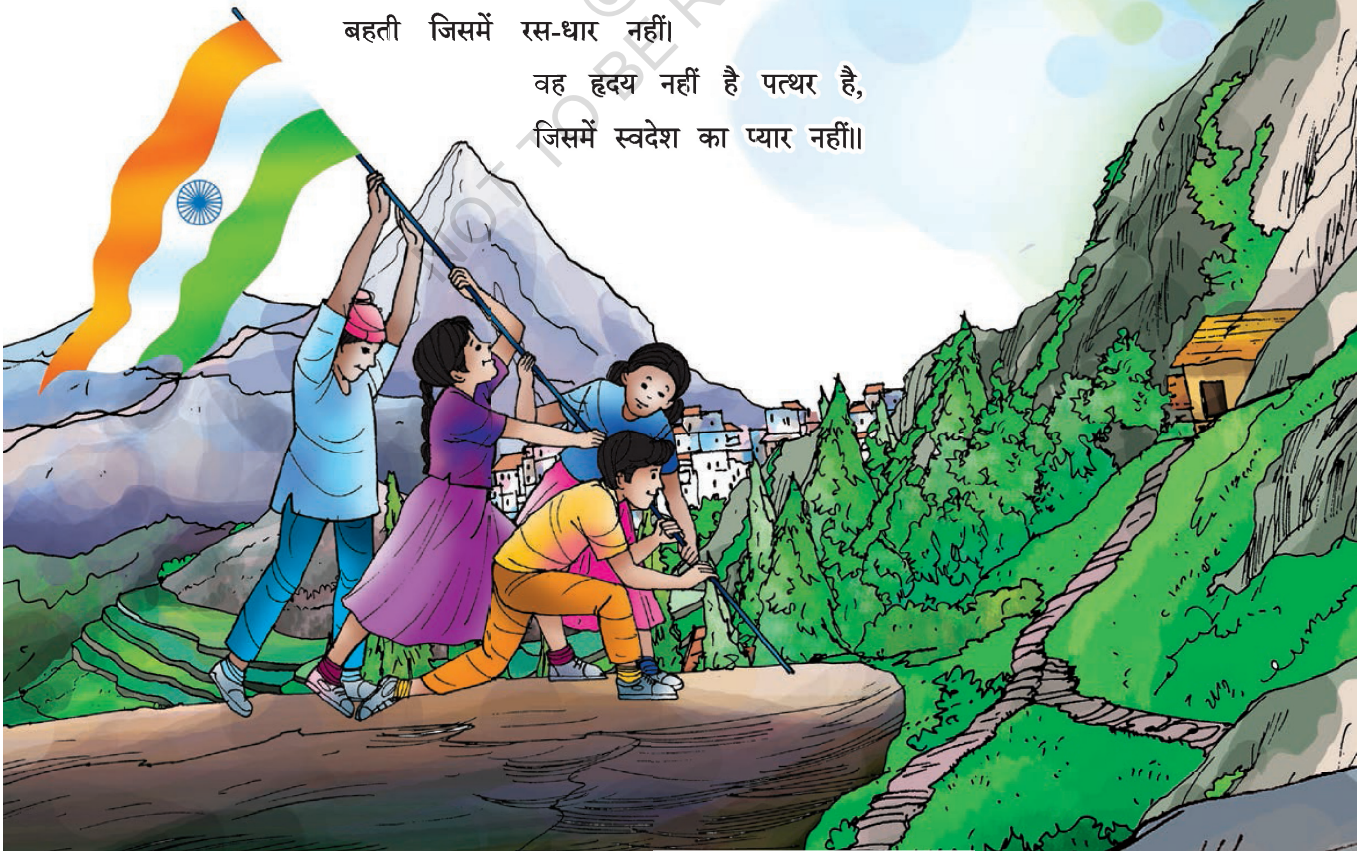
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
जो जीवित जोश जगा न सका,
उस जीवन में कुछ सार नहीं।

जो चल न सका संसार-संग,
उसका होता संसार नहीं॥
जिसने साहस को छोड़ दिया,
वह पहुँच सकेगा पार नहीं।

जिससे न जाति-उद्धार हुआ,
होगा उसका उद्धार नहीं॥
जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी॥

जिसने कि खजाने खोले हैं,
नव रत्न दिये हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
जिस पर है दुनिया दीवानी॥

उस पर है नहीं पसीजा जो,
क्या है वह भू का भार नहीं।
निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।

है काल-दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को॥
सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।

वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

— *गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'*



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कवि से परिचय



(1883–1972)

'स्वदेश' कविता के रचयिता गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' हिंदी के उन कवियों में से हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में कविता लिखना प्रारंभ कर खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवियों में अपना स्थान बनाया। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में हुआ। उन्होंने स्वयं कहा, "सरकारी नौकरी के कारण 'सनेही' के अतिरिक्त मुझे दूसरा उपनाम 'त्रिशूल' रखना पड़ा।" राष्ट्र-प्रेम की कविताओं के साथ-साथ उन्होंने किसान, मजदूर, सामाजिक कुरीतियों आदि विषयों पर प्रभावकारी कविताएँ लिखी हैं। *त्रिशूल तरंग, राष्ट्रीय मंत्र, कृषक क्रंदन* इनकी उल्लेखनीय रचनाओं में से हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. "वह हृदय नहीं है पत्थर है" इस पंक्ति में हृदय के पत्थर होने से तात्पर्य है—
   - सामाजिकता से
   - संवेदनहीनता से
   - कठोरता से
   - नैतिकता से
2. निम्नलिखित में से कौन-सा विषय इस कविता का मुख्य भाव है?
   - देश की प्रगति
   - देश के प्रति प्रेम
   - देश की सुरक्षा
   - देश की स्वतंत्रता



3. "हम हैं जिसके राजा-रानी" — इस पंक्ति में 'हम' शब्द किसके लिए आया है?

- देश के प्राकृतिक संसाधनों के लिए
- देश की शासन व्यवस्था के लिए
- देश के समस्त नागरिकों के लिए
- देश के सभी प्राणियों के लिए



4. कविता के अनुसार कौन-सा हृदय पत्थर के समान है?

- जिसमें साहस की कमी है
- जिसमें स्नेह का भाव नहीं है
- जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है
- जिसमें स्फूर्ति और उमंग नहीं है

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों का उनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलान कीजिए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं।	1. जिस देश की ज्ञान-संपदा से समूचा विश्व प्रभावित है।
2.	जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं।	2. जिस प्रकार युद्ध में तोप और तलवार की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रगति के लिए साहस और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।
3.	जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी।	3. जिसने किसी कार्य को करने का साहस छोड़ दिया हो वह किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।
4.	सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं।	4. जो स्वयं के साथ ही दूसरों को भी प्रेरित और उत्साहित नहीं कर सकते उनका जीवन निष्फल और अर्थहीन है।



पंक्तियों पर चर्चा

कविता से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।
है काल-दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को॥"

(ख) "सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"

(ग) "जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"





सोच-विचार के लिए

कविता को पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) "हम हैं जिसके राजा-रानी" पंक्ति में राजा-रानी किसे और क्यों कहा गया है?

(ख) 'संसार-संग' चलने से आप क्या समझते हैं? जो व्यक्ति 'संसार-संग' नहीं चलता, संसार उसका क्यों नहीं हो पाता है?

(ग) "उस पर है नहीं पसीजा जो/क्या है वह भू का भार नहीं।" पंक्ति से आप क्या समझते हैं? बताइए।

(घ) कविता में देश-प्रेम के लिए बहुत-सी बातें आई हैं। आप 'देश-प्रेम' से क्या समझते हैं? बताइए।

(ङ) यह रचना एक आह्वान गीत है जो हमें देश-प्रेम के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है। इस रचना की अन्य विशेषताएँ ढूँढ़िए और लिखिए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अनुमान और कल्पना से



अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए और लिखिए।

(क) "जिसने कि खजाने खोले हैं" अनुमान करके बताइए कि इस पंक्ति में किस प्रकार के खजाने की बात की गई होगी?

(ख) "जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े" पंक्ति में 'उगे-बढ़े' किसके लिए और क्यों कहा गया होगा?

(ग) "वह हृदय नहीं है पत्थर है" पंक्ति में 'हृदय' के लिए 'पत्थर' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया होगा?

(घ) कल्पना कीजिए कि पत्थर आपको अपनी कथा बता रहा है। वो आपसे क्या-क्या बातें करेगा और आप उसे क्या-क्या कहेंगे?

(संकेत— पत्थर— जब मैं नदी में था तो नदी की धारा मुझे बदलती भी थी।...)

(ङ) देश-प्रेम की भावना देश की सुरक्षा से ही नहीं, बल्कि संरक्षण से भी जुड़ी होती है। अनुमान करके बताइए कि देश के किन-किन संसाधनों या वस्तुओं आदि को संरक्षण की आवश्यकता है और क्यों?

कविता की रचना



"जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,

पाया जिसमें दाना-पानी।

हैं माता-पिता बंधु जिसमें,

हम हैं जिसके राजा-रानी।।"

इन पंक्तियों के अंतिम शब्दों को ध्यान से देखिए।

'दाना-पानी' और 'राजा-रानी' इन शब्दों की अंतिम ध्वनि एक-सी है। इस विशेषता को 'तुक मिलाना' कहते हैं। अब नीचे दिए गए प्रश्नों पर पाँच-पाँच के समूह में मिलकर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए।

(क) शब्दों के तुक मिलाने से कविता में क्या विशेष प्रभाव पड़ा है?

(ख) कविता को प्रभावशाली बनाने के लिए और क्या-क्या प्रयोग किए गए हैं?

आपकी कविता

देश-प्रेम से जुड़े अपने विचारों को आधार बनाते हुए कविता को आगे बढ़ाइए—



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

वह हृदय नहीं है पत्थर है,

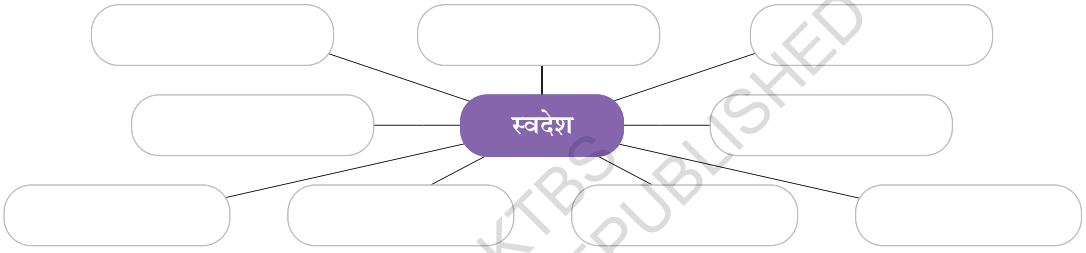
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।



भाषा की बात

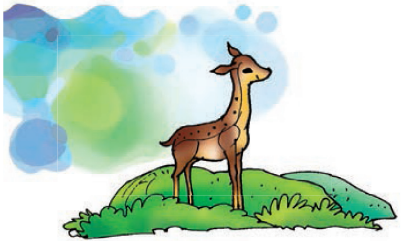
(क) शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'स्वदेश' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए। फिर मित्रों से मिलाकर अपनी सूची बढ़ाइए —



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(ख) विराम चिह्नों को समझें



"जो चल न सका संसार-संग"

"बहती जिसमें रस-धार नहीं"

"पाया जिसमें दाना-पानी"

"हैं माता-पिता बंधु जिसमें"

"हम हैं जिसके राजा-रानी"

"जिससे न जाति-उद्धार हुआ"



कविता में आई हुई उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। इनमें कुछ शब्दों के बीच एक चिह्न (-) लगा है। इसे योजक चिह्न कहते हैं। योजक चिह्न दो शब्दों में परस्पर संबंध स्पष्ट करने तथा उन्हें जोड़कर लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। कविता में संदर्भ के अनुसार योजक चिह्नों के स्थान पर **का**, **की**, **के** और **में** से कौन-से शब्द जोड़ेंगे जिससे अर्थ स्पष्ट हो सके। लिखिए। (संकेत— 'जो चल न सका संसार के संग')

(ग) शब्द-मित्र

"है जान एक दिन जाने को"

"है काल-दीप जलता हरदम"

उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों में 'है' शब्द पहले आया है जिसके कारण कविता में लयात्मकता आ गई है। यदि 'है' का प्रयोग पंक्ति के अंत में किया जाए तो यह गद्य जैसी लगने लगेगी, जैसे—

'जान एक दिन जाने को है।'

'काल-दीप हरदम जलता है।'

- अब आप कविता में से ऐसी पंक्तियों को चुनिए जिनमें 'है' शब्द का प्रयोग पहले हुआ है। चुनी हुई पंक्तियों में शब्दों के स्थान बदलकर पुनः लिखिए।
- अब नीचे दी गई पंक्तियों में 'है, हैं' शब्द का प्रयोग पहले करके पंक्तियों को पुनः लिखिए और देखिए कि इससे पंक्तियों के सौंदर्य में क्या परिवर्तन आया है। अपने साथियों से चर्चा कीजिए।

"जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,

जिस पर है दुनिया दीवानी॥"



(घ) समानार्थी शब्द

कविता से चुनकर कुछ शब्द निम्न तालिका में दिए गए हैं। दिए गए शब्दों से इनके समानार्थी शब्द ढूँढ़कर तालिका में दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए।

भू	दीप	हृदय	तलवार	दुनिया	पत्थर

@KTPS NOT TO BE REPUBLISHED

दिल, पाहन, प्रदीप, धरा, जग, असि, पृथ्वी, संसार, कृपाण, जी, दीपक, पाषाण

समानार्थी शब्द



कविता का शीर्षक

"वह हृदय नहीं है पत्थर है,

जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।"

इस कविता का शीर्षक है 'स्वदेश'। कई बार कवि कविता की किसी पंक्ति को ही कविता का शीर्षक बनाते हैं। यदि आपको भी इस कविता की किसी एक पंक्ति को चुनकर नया शीर्षक देना हो तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

पाठ से आगे



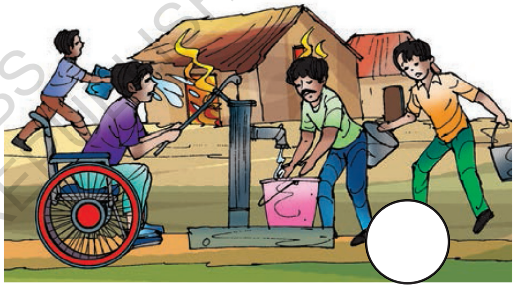
आपकी बात

(क) नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। उन चित्रों पर सही (✓) का चिह्न लगाइए जिन्हें आप 'स्वदेश प्रेम' की श्रेणी में रखना चाहेंगे?











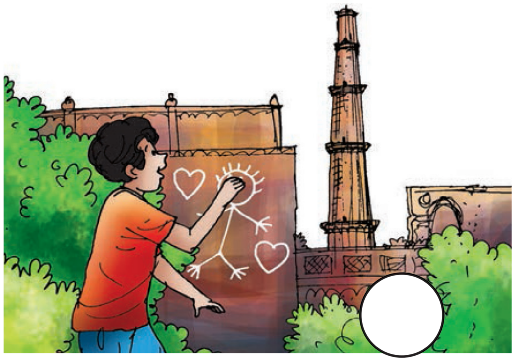


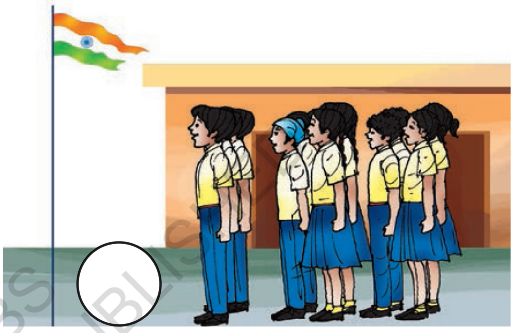


© RTBS NOT TO BE REPUBLISHED



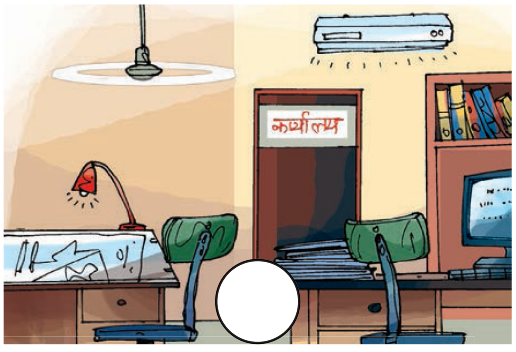














(ख) अब आप अपने उत्तर के पक्ष में तर्क भी दीजिए।

@KTBS
REPUBLIC



हमारे अस्त्र-शस्त्र



"सब कुछ है अपने हाथों में,

क्या तोप नहीं तलवार नहीं।"

देश की सीमा पर सैनिक सुरक्षा प्रहरी की भाँति खड़े रहते हैं। वे बुरी भावना से अतिक्रमण करने वाले का सामना तोप, तलवार, बंदूक आदि से करते हैं।

आप बताइए कि निम्नलिखित स्वदेश प्रेमियों के अस्त्र-शस्त्र क्या होंगे?

- विद्यार्थी _____
- अध्यापक _____
- कृषक _____
- चिकित्सक _____
- वैज्ञानिक _____
- श्रमिक _____
- पत्रकार _____



अपनी भाषा अपने गीत

(क) कक्षा में सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी भाषा में देश-प्रेम से संबंधित कविताओं और गीतों का संकलन करें।

(ख) किसी एक गीत की कक्षा में संगीतात्मक प्रस्तुति भी करें।



तिरंगा झंडा — कब प्रसन्न और कब उदास

राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा झंडा) देश का सम्मान है। किसी एक दिन सोने से पहले अपने पूरे दिन के कार्यों को याद कीजिए और विचार कीजिए कि आपके किन कार्यों से तिरंगा झंडा उदास हुआ होगा और किन कार्यों से तिरंगे झंडे को प्रसन्नता हुई होगी।



झरोखे से

आपने देश-प्रेम से संबंधित 'स्वदेश' कविता पढ़ी। अब आप स्वदेशी कपड़े 'खादी' से संबंधित सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'खादी गीत' का एक अंश पढ़िए।

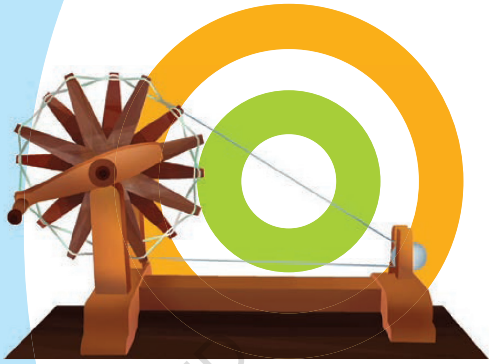
@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

खादी गीत

खादी के धागे-धागे में
अपनेपन का अभिमान भरा,
माता का इसमें मान भरा,
अन्यायी का अपमान भरा;

खादी के रेशे-रेशे में
अपने भाई का प्यार भरा,
माँ-बहनों का सत्कार भरा,
बच्चों का मधुर दुलार भरा;

खादी की रजत चंद्रिका जब,
आकर तन पर मुसकाती है,
तब नवजीवन की नई ज्योति
अंतस्तल में जग जाती है;



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



साझी समझ

आपने 'स्वदेश' कविता और 'खादी गीत' का उपर्युक्त अंश पढ़ा। स्वतंत्रता आंदोलन के समय लिखी गई दोनों कविताओं में देश-प्रेम किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है? साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए। साथ ही 'खादी गीत' पूरी कविता को पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।



खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग कर आप देश-प्रेम और स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित रचनाएँ पढ़ सकते हैं—

- सारे जहाँ से अच्छा

https://www.youtube.com/watch?v=xestTq6jdjI

- दीवानों की हस्ती

https://www.youtube.com/watch?v=n4LOnShHEC4

- झाँसी की रानी

https://www.youtube.com/watch?v=QpTL2qBOiwc

2 दो गौरैया

0871CH02

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं— माँ, पिताजी और मैं। पर पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है। हम तो जैसे यहाँ मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।

आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं। जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो। यहाँ कभी तोते पहुँच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह-तरह की गौरैयाँ। वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!

घर के अंदर भी यही हाल है। बीसियों तो चूहे बसते हैं। रात-भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं। वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते। बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं। एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है। एक दूसरा है जिसे बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसंद है। उसे शायद गरमी बहुत लगती है। बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं मगर घर उसे भी पसंद है और वह कभी-कभी झाँक जाती है।



© NCERT @KVBS NOT TO BE REPUBLISHED

मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है। शाम पड़ते ही दो-तीन चमगादड़ कमरों के आर-पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं। घर में कबूतर भी हैं। दिन-भर 'गुटर-गूँ गुटर-गूँ' का संगीत सुनाई देता रहता है। इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियाँ भी हैं और बर्रे भी हैं और चींटियों की तो जैसे फौज ही छावनी डाले हुए है।

अब एक दिन दो गौरैया सीधी अंदर घुस आईं और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं। पिताजी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आई थीं वैसे ही उड़ भी गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है और सामान भी ले आई हैं और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। जाहिर है, उन्हें घर पसंद आ गया था।

माँ और पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे। थोड़ी देर बाद माँ सिर हिलाकर बोलीं, "अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।"

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



इस पर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, "देखता हूँ ये कैसे यहाँ रहती हैं! गौरैयाँ मेरे आगे क्या चीज हैं! मैं अभी निकाल बाहर करता हूँ।"

"छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!" माँ ने व्यंग्य से कहा।

माँ कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिताजी उबल पड़ते हैं, वह समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं। वह फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर जोर से ताली बजाई और मुँह से 'श...शू' कहा, बाँहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे, कभी बाँहें झुलाते, कभी 'श...शू' करते।

गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झाँककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं। और माँ खिलखिलाकर हँसने लगीं।

पिताजी को गुस्सा आ गया, "इसमें हँसने की क्या बात है?"

माँ को ऐसे मौकों पर हमेशा मजाक सूझता है। हँसकर बोली, "चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?"

तब पिताजी को और भी ज्यादा गुस्सा आ गया और वह पहले से भी ज्यादा ऊँचा कूदने लगे।

गौरैयाँ घोंसले में से निकलकर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं। उन्हें पिताजी का नाचना जैसे बहुत पसंद आ रहा था। माँ फिर हँसने लगीं, "ये निकलेंगी नहीं, जी। अब इन्होंने अंडे दे दिए होंगे।"

"निकलेंगी कैसे नहीं?" पिताजी बोले और बाहर से लाठी उठा लाए। इसी बीच गौरैयाँ फिर घोंसले में जा बैठी थीं। उन्होंने लाठी ऊँची उठाकर पंखे के गोले को ठकोरा। 'चीं-चीं' करती गौरैयाँ उड़कर पर्दे के डंडे पर जा बैठीं।

"इतनी तकलीफ करने की क्या जरूरत थी। पंखा चला देते, तो ये उड़ जातीं।" माँ ने हँसकर कहा।

पिताजी लाठी उठाए पर्दे के डंडे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर किचन के दरवाजे पर जा बैठी। दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाजे पर।

माँ फिर हँस दी। "तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाजे खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।"

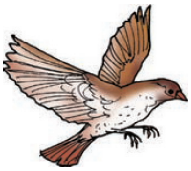
अब पिताजी ने मुझे झिड़ककर कहा, "तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाजे बंद कर दे!"

मैंने भागकर दोनों दरवाजे बंद कर दिए केवल किचन वाला दरवाजा खुला रहा।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

पिताजी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। एक बार तो झूलती लाठी माँ के सिर पर लगते-लगते बची। चीं-चीं करती चिड़ियाँ कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं। आखिर दोनों किचन की ओर खुलने वाले दरवाजे में से बाहर निकल गईं। माँ तालियाँ बजाने लगीं। पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।





"आज दरवाजे बंद रखो" उन्होंने हुक्म दिया। "एक दिन अंदर नहीं घुस पाएँगी, तो घर छोड़ देंगी।"

तभी पंखे के ऊपर से चीं-चीं की आवाज सुनाई पड़ी। और माँ खिलखिलाकर हँस दी। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैयाँ फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं।

"दरवाजे के नीचे से आ गई हैं," माँ बोलीं।

मैंने दरवाजे के नीचे देखा। सचमुच दरवाजों के नीचे थोड़ी-थोड़ी जगह खाली थी।

पिताजी को फिर गुस्सा आ गया। माँ मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हँसे जा रही थीं।

अब तो पिताजी गौरैयों पर पिल पड़े। उन्होंने दरवाजों के नीचे कपड़े ठूँस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए। और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े। चिड़ियाँ चीं-चीं करती फिर बाहर निकल गईं। पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं। अबकी बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।

"देखो—जी, चिड़ियों को मत निकालो," माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा, अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब ये यहाँ से नहीं जाएँगी।

"क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूँ?" पिताजी बोले और कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूँस दिया और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया। दोनों पिछले आँगन की दीवार पर जा बैठीं।

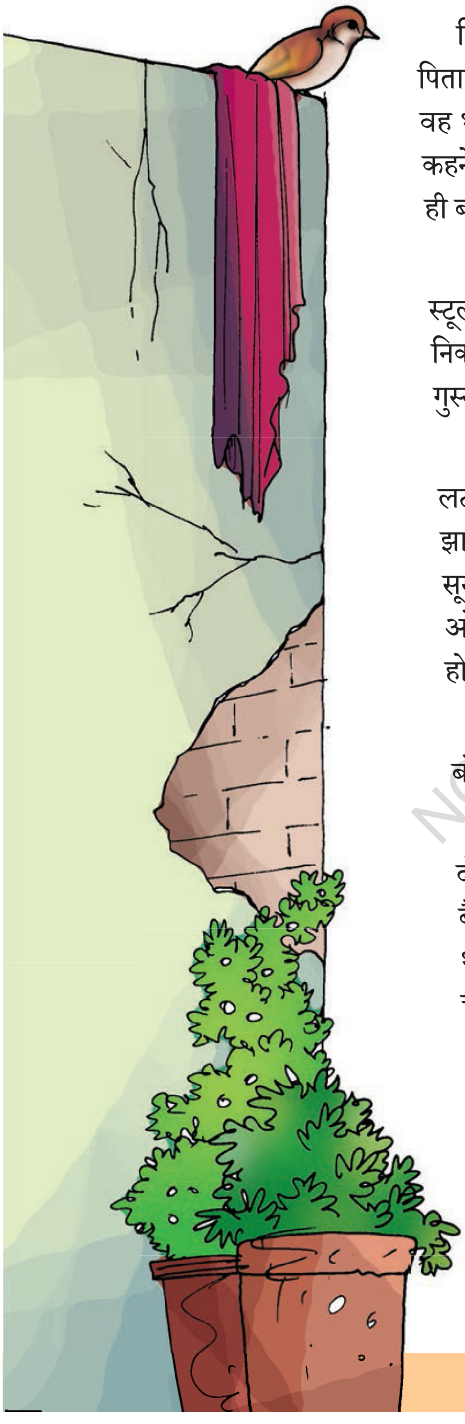
इतने में रात पड़ गई। हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए। जाने से पहले मैंने आँगन में झाँककर देखा, चिड़ियाँ वहाँ पर नहीं थीं। मैंने समझ लिया कि उन्हें अक्ल आ गई होगी। अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं। पिताजी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं पर रात के वक्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से वे अंदर घुस आतीं।



पिताजी परेशान हो उठे। आखिर कोई कहाँ तक लाठी झुला सकता है? पिताजी बार-बार कहें, "मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।" पर आखिर वह भी तंग आ गए थे। आखिर जब उनकी सहनशीलता चुक गई तो वह कहने लगे कि वह गौरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे। और वह फौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए।

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था। उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए," उन्होंने गुस्से से कहा।

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो झालर टाँग रखी हो। पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया और दाईं ओर को खींचा। दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे।

"चलो, दो तिनके तो निकल गए" माँ हँसकर बोलीं, "अब बाकी दो हजार भी निकल जाएँगे!"

तभी मैंने बाहर आँगन की ओर देखा और मुझे दोनों गौरैयाँ नजर आईं। दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं। इस बीच दोनों कुछ-कुछ दुबला गई थीं, कुछ-कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।

अब पिताजी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। वे लिपटते गए, लिपटते गए और घोंसला



NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

लाठी के इर्द-गिर्द खिंचता चला आने लगा। फिर वह खींच-खींचकर लाठी के सिरे के इर्द-गिर्द लपेटा जाने लगा। सूखी घास और रुई के फाहे और धागे और थिगलियाँ लाठी के सिरे पर लिपटने लगीं। तभी सहसा जोर की आवाज आई, "चीं-चीं, चीं-चीं!!!"

पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? क्या गौरैयाँ लौट आई हैं? मैंने झट से बाहर की ओर देखा। नहीं, दोनों गौरैयाँ बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं।

"चीं-चीं, चीं-चीं!" फिर आवाज आई। मैंने ऊपर देखा। पंखे के गोले के ऊपर से नन्हीं-नन्हीं गौरैयाँ सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं और चीं-चीं किए जा रही थीं। अभी भी पिताजी के हाथ में लाठी थी और उस पर लिपटा घोंसले का बहुत-सा हिस्सा था। नन्हीं-नन्हीं दो गौरैयाँ! वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा, पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं। और घोंसले के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक ओर रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। इस बीच माँ कुर्सी पर से उठीं और सभी दरवाजे खोल दिए। नन्हीं चिड़ियाँ अभी भी हाँफ-हाँफकर चिल्लाए जा रही थीं और अपने माँ-बाप को बुला रही थीं।

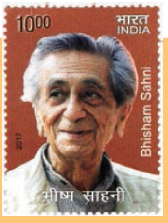
उनके माँ-बाप झट-से उड़कर अंदर आ गए और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं-नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे। माँ-पिताजी और मैं उनकी ओर देखते रह गए। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।

— भीष्म साहनी

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



लेखक से परिचय



(1915–2003)

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे। उन्होंने अपनी कहानियों में देश विभाजन और मानवीय मूल्यों की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास *तमस* पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था। साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार ने पद्म भूषण से अलंकृत किया था। बच्चों के लिए उन्होंने 'गुलेल का खेल' आदि कई कहानियाँ लिखी हैं।



पाठ से

आइए, अब हम इस कहानी को थोड़ी और स्पष्टता से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।



मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) पिताजी ने कहा कि घर सराय बना हुआ है क्योंकि—

- घर की बनावट सराय जैसी बहुत विशाल है
- घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं
- पिताजी और माँ घर के मालिक नहीं हैं
- घर में विभिन्न जीव-जंतु आते-जाते रहते हैं

(2) कहानी में 'घर के असली मालिक' किसे कहा गया है?

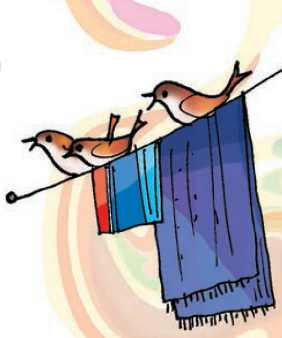
- माँ और पिताजी को जिनका वह मकान है
- लेखक को जिसने यह कहानी लिखी है
- जीव-जंतुओं को जो उस घर में रहते थे
- मेहमानों को जो लेखक से मिलने आते थे

(3) गौरैयों के प्रति माँ और पिताजी की प्रतिक्रियाएँ कैसी थीं?

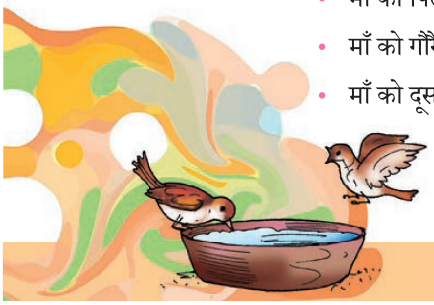
- दोनों ने खुशी से घर में उनका स्वागत किया
- पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया
- दोनों ने मिलकर उन्हें घर से बाहर निकाल दिया
- माँ ने उन्हें निकालने के लिए कहा लेकिन पिताजी ने घर में रहने दिया

(4) माँ बार-बार पिताजी की बातों पर मुसकराती और मजाक करती थीं। इससे क्या पता चलता है?

- माँ चाहती थीं कि गौरैयाँ घर से भगाई न जाएँ
- माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे
- माँ को गौरैयों की गतिविधियों पर हँसी आ जाती थी
- माँ को दूसरों पर हँसना और उपहास करना अच्छा लगता था







© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



(5) कहानी में गौरैयों के बार-बार लौटने को जीवन के किस पहलू से जोड़ा जा सकता है?

- दूसरों पर निर्भर रहना
- असफलताओं से हार मान लेना
- अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना
- संघर्ष को छोड़कर नए रास्ते अपनाना



(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

(क) पाठ में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो अर्थ दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सबसे उपयुक्त अर्थ से मिलाइए।

क्रम	वाक्य	अर्थ
1.	वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!	• पक्षियों का शोर बहुत तेज होता है, लेकिन लोग उसे संगीत की तरह सराहते हैं। • पिताजी को पक्षियों का चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।
2.	आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं।	• आम के पेड़ पर अलग-अलग प्रकार के पक्षी हर समय निवास करते हैं। • पक्षी पेड़ पर तंबू लगाकर रहते हैं जैसे किसी मेले में डेरा डाला जाता है।
3.	वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते।	• पिताजी की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के चूहे चैन से सो नहीं पाते। • चूहों की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के लोग चैन से सो नहीं पाते।
4.	वह समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं।	• पिताजी माँ का मजाक समझ जाते हैं। • पिताजी को ऐसा भ्रम होने लगता है कि माँ उनकी चेष्टाओं का उपहास कर रही हैं।
5.	पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।	• पिताजी ने लाठी एक ओर रख दी और गर्व से, विजयी मुद्रा में बैठ गए। • पिताजी की छाती और साँस फूलने लगी और उन्होंने लाठी एक ओर रख दी।
6.	इतने में रात पड़ गई।	• रात किसी भारी चीज की तरह ऊपर से गिर पड़ी। • कहानी की घटनाओं के बीच धीरे-धीरे रात हो गई और अँधेरा छा गया।
7.	जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं।	• गौरैयाँ फिर से लौट आई थीं और शांत व प्रसन्न भाव से चहचहा रही थीं जैसे कोई राग गा रही हों। • गौरैयाँ शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रही थीं और 'राग मल्हार' गा रही थीं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(ख) अपने उत्तर को अपने मित्रों के उत्तर से मिलाइए और विचार कीजिए कि आपने कौन-से अर्थ का चुनाव किया है और क्यों?



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।"

(ख) "एक दिन अंदर नहीं घुस पाएँगी, तो घर छोड़ देंगी।"

(ग) "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए।"



सोच-विचार के लिए

पाठ को पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) आपको कहानी का कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा— घर पर रहने आई गौरैयाँ, माँ, पिताजी, लेखक या कोई अन्य प्राणी? आपको उसकी कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं और क्यों?

(ख) लेखक के घर में चिड़िया ने अपना घोंसला कहाँ बनाया? उसने घोंसला वहीं क्यों बनाया होगा?

(ग) क्या आपको लगता है कि पशु-पक्षी भी मनुष्यों के समान परिवार और घर का महत्व समझते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कहानी से उदाहरण दीजिए।

(घ) "अब मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।" इस कथन से पिताजी के स्वभाव के कौन-से गुण उभरकर आते हैं?

(ङ) कहानी में गौरैयों के व्यवहार में कब और कैसा बदलाव आया? यह बदलाव क्यों आया?

(संकेत— कहानी में खोजिए कि उन्होंने गाना कब बंद कर दिया?)

(च) कहानी में गौरैयाँ ने किन-किन स्थानों से घर में प्रवेश किया था? सूची बनाइए।

(छ) इस कहानी को कौन सुना रहा है? आपको यह बात कैसे पता चली?

(ज) माँ बार-बार क्यों कह रही होंगी कि गौरैयाँ घर छोड़कर नहीं जाएँगी?







© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED





अनुमान और कल्पना से

(क) कल्पना कीजिए कि आप उस घर में रहते हैं जहाँ चिड़ियाँ अपना घर बना रही हैं। अपने घर में उन्हें देखकर आप क्या करते?



(ख) मान लीजिए कि कहानी में चिड़िया नहीं, बल्कि नीचे दिए गए प्राणियों में से कोई एक प्राणी घर में घुस गया है। ऐसे में घर के लोगों का व्यवहार कैसा होगा? क्यों?

(प्राणियों के नाम— चूहा, कुत्ता, मच्छर, बिल्ली, कबूतर, कॉकरोच, तितली, मक्खी)

(ग) "मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा।" लेखक को विस्मय या हैरानी किसे देखकर हुई? उसे विस्मय क्यों हुआ होगा?

(घ) "माँ मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हँसे जा रही थीं।" माँ ने गौरैयों को निकालने में पिताजी की सहायता क्यों नहीं की होगी?

(ङ) "एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है।" लेखक ने चूहे के विशेष व्यवहार से अनुमान लगाया कि उसे सर्दी लगती होगी। आप भी किसी एक अपरिचित व्यक्ति या प्राणी के व्यवहार को ध्यान से देखकर अनुमान लगाइए कि वह क्या सोच रहा होगा, क्या करता होगा या वह कैसा व्यक्ति होगा आदि। (संकेत— आपको उसके व्यवहार पर ध्यान देना है, उसके रंग-रूप या वेशभूषा पर नहीं)

(च) "पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है।" सराय और घर में कौन-कौन से अंतर होते होंगे?



संवाद और अभिनय

नीचे दी गई स्थितियों के लिए अपने समूह में मिलकर अपनी कल्पना से संवाद लिखिए और बातचीत को अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए—

(क) "वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं" नन्हीं-नन्हीं दो गौरैया क्या-क्या बोल रही होंगी?

(ख) "चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?" घोंसले से झाँकती गौरैयाँ क्या-क्या बातें कर रही होंगी?

(ग) "एक दिन दो गौरैया सीधी अंदर घुस आईं और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं।" जब उन्होंने पहली बार घर में प्रवेश किया तो उन्होंने आपस में क्या बातें की होंगी?

(घ) "उनके माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं-नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे।" गौरैयों और उनके बच्चों ने क्या-क्या बातें की होंगी?



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



बदली कहानी

मान लीजिए कि घोंसले में अंडों से बच्चे न निकले होते। ऐसे में कहानी आगे कैसे बढ़ती? यह बदली हुई कहानी लिखिए।



कहने के ढंग/क्रिया विशेषण



"माँ खिलखिलाकर हँस दीं।"

इस वाक्य में 'खिलखिलाकर' शब्द बता रहा है कि माँ कैसे हँसी थीं। कोई कार्य कैसे किया गया है, इसे बताने वाले शब्द 'क्रिया विशेषण' कहलाते हैं। 'खिलखिलाकर' भी एक क्रिया विशेषण शब्द है।

अब नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए।

(क) पिताजी ने झिड़ककर कहा, "तू खड़ा क्या देख रहा है?"

(ख) "देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो", माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा।

(ग) "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए", उन्होंने गुस्से में कहा।

अब आप इनसे मिलते-जुलते कुछ और क्रिया विशेषण शब्द सोचिए और उनका प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाइए।

(संकेत— धीरे से, जोर से, अटकते हुए, चिल्लाकर, शरमाकर, सहमकर, फुसफुसाते हुए आदि।)



घर के प्राणी

कहानी में आपने पढ़ा कि लेखक के घर में अनेक प्राणी रहते थे। लेखक ने उनका वर्णन ऐसे किया है जैसे वे भी मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हैं। कहानी में से चुनकर उन प्राणियों की सूची बनाइए और बताइए कि वे मनुष्यों जैसे कौन-कौन से काम करते थे?



(क) *बिल्ली— 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है।*

(ख) _____

(ग) _____

(घ) _____

(ङ) _____

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



हेर-फेर मात्रा का

"माँ <u>और</u> पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी <u>ओर</u> देखे जा रहे थे।"

"पहले इन्हें <u>उड़ा</u> देते, तो <u>उड़</u> जातीं।"

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। आपने ध्यान दिया होगा कि शब्द में एक मात्रा-भर के अंतर से उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है।

अब नीचे दिए गए शब्दों की मात्राओं और अर्थों के अंतर पर ध्यान दीजिए। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए।



- नाच-नाचा-नचा
- हार-हरा-हारा
- पिता-पीता
- चूक-चुक
- नीचा-नीचे
- सहसा-साहस



वाद-विवाद

कहानी में माँ द्वारा कही गई कुछ बातें नीचे दी गई हैं—

"अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं।"

"एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।"

"देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो। अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब यहाँ से नहीं जाएँगी।"

कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। वाद-विवाद का विषय है—

"माँ चिड़ियों को घर से निकालना चाहती थीं।"

कक्षा में आधे समूह इस कथन के पक्ष में और आधे समूह इसके विपक्ष में तर्क देंगे।



कहानी की रचना

"कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।"

इस पंक्ति में बताया गया है कि पिताजी का दृष्टिकोण कैसे बदल गया। इस प्रकार यह विशेष वाक्य है। इस तरह के वाक्यों से कहानी और अधिक प्रभावशाली बन जाती है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(क) आपको इस कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। उन्हें अपने समूह के साथ मिलकर ढूँढ़िए और उनकी सूची बनाइए।

(ख) इस कहानी की कुछ विशेषताओं को नीचे दिया गया है। इनके उदाहरण कहानी में से चुनकर लिखिए।



आपकी बात

कहानी की विशेषताएँ	कहानी में से उदाहरण
1. किसी बात को कल्पना से बढ़ा-चढ़ाकर कहना	जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो।
2. हास्य यानी हँसी-मज़ाक का उपयोग किया जाना	
3. सोचा कुछ और, हुआ कुछ और	
4. दूसरों के मन के भावों का अनुमान लगाना	
5. किसी की कही बात को उसी के शब्दों में लिखना	
6. किसी प्राणी या उसके कार्य को कोई अन्य नाम देना	
7. किसने किससे कोई बात कही, यह सीधे-सीधे बताए बिना उस संवाद को लिखना	

NOT TO BE REPUBLISHED ©KTBS

पाठ से आगे

(क) "गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झाँककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं।" आपने अपने घर के आस-पास पक्षियों को क्या-क्या करते देखा है? उनके व्यवहार में आपको कौन-कौन से भाव दिखाई देते हैं?

(ख) "कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।" कहानी के अंत में पिताजी गौरैयों का अपने घर में रहना स्वीकार कर लेते हैं। क्या आप भी कोई स्थान या वस्तु किसी अन्य के साथ साझा करते हैं? उनके बारे में बताइए। साझेदारी में यदि कोई समस्या आती है तो उसे कैसे हल करते हैं?

(ग) परिवार के लोग गौरैयों को घर से बाहर भगाने की कोशिश करते हैं, किंतु गौरैयों के बच्चों के कारण उनका दृष्टिकोण बदल जाता है। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि किसी को देखकर या किसी से मिलकर आपका दृष्टिकोण बदल गया हो?



चिड़ियों का घोंसला

घोंसला बनाना चिड़ियों के जीवन का एक सामान्य हिस्सा है। विभिन्न पक्षी अलग-अलग तरह के घोंसले बनाते हैं। इन घोंसलों में वे अपने अंडे देते हैं और अपने चूजों को पालते हैं।

(क) अपने आस-पास विभिन्न प्रकार के घोंसले ढूँढ़िए और उन्हें ध्यान से देखिए और नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए। *(सावधानी— उन्हें हाथ न लगाएँ अन्यथा पक्षियों, उनके अंडों और आपको भी खतरा हो सकता है)*



क्रम संख्या	घोंसले को कहाँ देखा	घोंसला किन चीजों से बनाया गया था	घोंसला खाली था या नहीं	घोंसला किस पक्षी का था

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(ख) विभिन्न पक्षियों के घोंसलों के संबंध में एक प्रस्तुति तैयार कीजिए। उसमें आप चाहें तो उनके चित्र और थोड़ी रोचक जानकारी सम्मिलित कर सकते हैं।



मल्हार

"जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं।"

'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत के एक प्रसिद्ध राग का नाम है। यह राग वर्षा ऋतु से जुड़ा है। आप जानते ही हैं कि आपकी हिंदी पाठ्यपुस्तक का नाम *मल्हार* भी इसी राग के नाम पर है।

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों के माध्यम से राग मल्हार को सुनिए और इसका आनंद लीजिए—

https://www.youtube.com/watch?v=3iQHe2hIJGM

https://www.youtube.com/watch?v=pHbXFAhQtpI

https://www.youtube.com/watch?v=7K3SYX8THkw



हास्य-व्यंग्य

"छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे! माँ ने व्यंग्य से कहा।"

आप समझ गए होंगे कि इस वाक्य में माँ ने पिताजी से कहा है कि वे चिड़ियों को नहीं निकाल सकते। इस प्रकार से कही गई बात को 'व्यंग्य करना' कहते हैं।

व्यंग्य का अर्थ होता है— हँसी-मज़ाक या उपहास के माध्यम से किसी कमी, बुराई या विडंबना को उजागर करना।

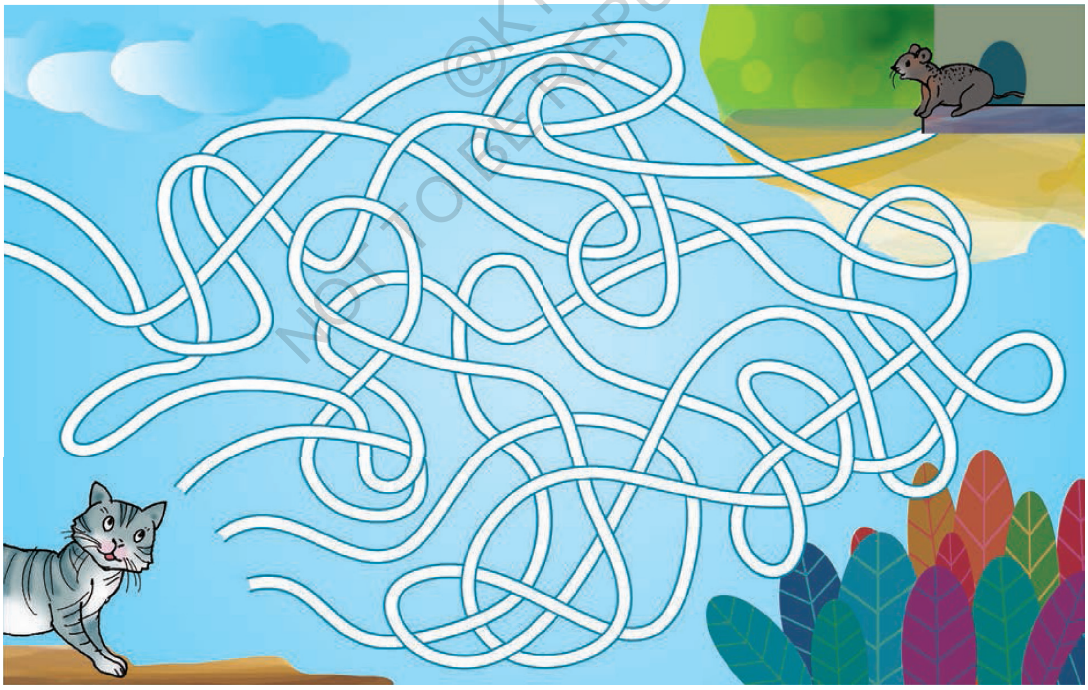
व्यंग्य में बात को सीधे न कहकर **उलटा या संकेतात्मक ढंग** से कहा जाता है ताकि उसमें **चुटकीलापन** भी हो और **गंभीर सोच** की संभावना भी बनी रहे। अनेक बार व्यंग्य में हास्य भी छिपा होता है।

(क) आपको इस कहानी में कौन-कौन से वाक्य पढ़कर हँसी आई? उन वाक्यों को चुनकर लिखिए।

(ख) अब चुने हुए वाक्यों में से कौन-कौन से वाक्य 'व्यंग्य' कहे जा सकते हैं? उन पर सही का चिह्न लगाइए।

आज की पहेली

नीचे दी गई चित्र-पहेली में बिल्ली को चूहे तक पहुँचाइए।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



झरोखे से

'दो गौरैया' कहानी में आपने पढ़ा कि 'दो गौरैया' लेखक के घर में बिन बुलाए अतिथि की तरह आ जाती हैं। पिछले कई वर्षों से गाँव-नगरों में इन नन्हीं चिड़ियों की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। इसलिए भारत सरकार ने इनके संरक्षण के लिए 20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' घोषित किया है। आइए, पढ़ते हैं 'विश्व गौरैया दिवस' पर प्रेस सूचना ब्यूरो द्वारा प्रकाशित लेख का एक अंश—

कभी बहुतायत में पाई जाने वाली घरेलू गौरैया अब कई जगहों पर एक दुर्लभ दृश्य और रहस्य बन गई है। इन छोटे प्राणियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उनकी रक्षा करने के लिए, हर साल 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है।



भारत में गौरैया सिर्फ़ पक्षी नहीं हैं; वे साझा इतिहास और संस्कृति का प्रतीक हैं। हिंदी में "गोरैया", तमिल में "कुरुवी" और उर्दू में "चिरिया" जैसे कई नामों से जानी जाने वाली गौरैया पीढ़ियों से दैनिक जीवन का हिस्सा रही हैं।

उनकी महत्ता के बावजूद, गौरैया तेजी से लुप्त हो रही हैं। इस गिरावट के कई कारण हैं। सीसा रहित पेट्रोल के उपयोग से जहरीले यौगिक पैदा हुए हैं जो उन कीटों को नुकसान पहुँचाते हैं, जिन पर गौरैया भोजन के लिए निर्भर हैं। शहरीकरण ने उनके प्राकृतिक घोंसले के स्थान भी छीन लिए हैं। आधुनिक इमारतों में वे स्थान नहीं होते जहाँ गौरैया घोंसला बना सकें, जिससे उनके बच्चों को पालने के लिए जगह कम हो गई है।

साभार— पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (भारत सरकार)

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



साझी समझ

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी का प्रयोग कर इस लेख को पूरा पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2112370



मित्रलाभ

दक्षिण देश के एक प्रांत में महिलारोप्य नाम का एक नगर था। वहाँ एक विशाल वटवृक्ष की शाखाओं पर लघुपतनक नाम का कौआ रहता था। एक दिन वह अपने आहार की चिंता में शहर की ओर चला ही था कि उसने देखा कि एक फटे पाँव और बिखरे बालों वाला भयंकर व्याध उधर ही चला आ रहा है। कौवे को उसे देखकर वृक्ष पर रहने वाले अन्य पक्षियों की चिंता हुई। उन्हें व्याध के चंगुल से बचाने के लिए वह पीछे लौट पड़ा और वहाँ सब पक्षियों को सावधान कर दिया और कहा कि जब यह व्याध वृक्ष के पास भूमि पर अनाज के दाने बिखेरे, तब कोई भी पक्षी उन्हें चुगने के लालच से न जाय, उन दानों को कालकूट की तरह जहरीला समझे।

कौआ अभी यह कह ही रहा था कि व्याध ने वटवृक्ष के नीचे आकर दाने बिखेर दिए और स्वयं दूर जाकर झाड़ी के पीछे छिप गया। पक्षियों ने भी लघुपतनक का उपदेश मानकर दाने नहीं चुगे। वे उन दानों को हलाहल विष की तरह मानते रहे किंतु, इसी बीच में व्याध के सौभाग्य से कबूतरों का राजा चित्रग्रीव अपने हजारों अनुचरों के सहित उड़ता हुआ वहाँ आया। लघुपतनक ने उसे भी चेतावनी दी परंतु वह भूमि पर बिखरे हुए उन दानों को चुगने की लालसा को न रोक सका। परिणाम यह हुआ कि वह अपने परिजनों समेत जाल में फँस गया। लोभ का यही परिणाम होता है। लोभ से विवेकशक्ति नष्ट हो जाती है। जाल में फँसने के बाद चित्रग्रीव ने अपने साथी कबूतरों को समझाया कि वे डरें नहीं और एकजुट होकर पूरी शक्ति से जाल समेत उड़कर व्याध की दृष्टि से ओझल हो जाएँ तो बच जाएँगे। तत्पश्चात सब कबूतर जाल लेकर उड़ गये और व्याध देखता रह गया! लघुपतनक ने जब देखा तो वह कौतूहलवश कबूतरों के पीछे-पीछे उड़ने लगा।

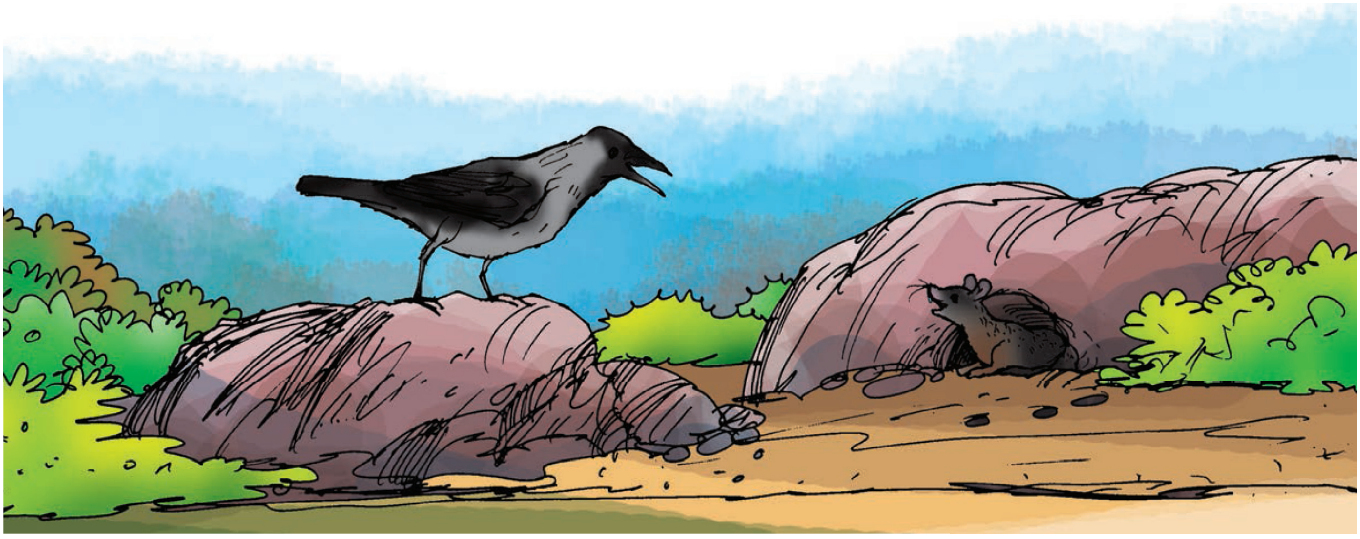
NOT TO BE REPUBLISHED

व्याध जब दूर हो गया तब चित्रग्रीव ने अपने साथियों को कहा— "व्याध तो लौट गया। अब चिंता की कोई बात नहीं। चलो, हम महिलारोप्य शहर के पूर्वोत्तर भाग की ओर चलें। वहाँ मेरा घनिष्ठ मित्र हिरण्यक नाम का चूहा रहता है। उससे हम अपने जाल को कटवा लेंगे। तभी हम आकाश में स्वच्छंद घूम सकेंगे।"

वहाँ हिरण्यक नाम का चूहा अपने एक हजार बिलों वाले दुर्ग में रहता था। इसीलिए उसे डर नहीं लगता था। चित्रग्रीव ने उसके द्वार पर पहुँच कर पुकारा— "मित्र हिरण्यक! शीघ्र आओ। मुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है।"



उसकी आवाज सुनकर हिरण्यक ने अपने ही बिल में छिपे-छिपे प्रश्न किया— "तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? क्या प्रयोजन है?..."



चित्रग्रीव ने कहा— "मैं तुम्हारा मित्र चित्रग्रीव हूँ। तुम जल्दी बाहर आओ; मुझे तुमसे विशेष काम है।"

यह सुनकर हिरण्यक प्रफुल्लित होकर अपने बिल से बाहर आया। अपने मित्र चित्रग्रीव को साथियों सहित जाल में फँसा देखकर दुखित स्वर में बोला, "मित्र! यह क्या हो गया तुम्हें?" चित्रग्रीव ने कहा— "जीभ के लालच से हम जाल में फँस गए। तुम हमें जाल से मुक्त कर दो।"

हिरण्यक जब चित्रग्रीव के जाल का धागा काटने लगा तब उसने कहा— "पहले मेरे साथियों के बंधन काट दो, बाद में मेरे काटना।"

हिरण्यक— "तुम इन सब के नायक हो, पहले अपने बंधन कटवा लो, साथियों के पीछे कटवाना।"

चित्रग्रीव— "वे मेरे अनुचर हैं, अपने घर-बार को छोड़कर मेरे साथ आए हैं। मेरा धर्म है कि पहले इनकी सुख-सुविधा को दृष्टि में रखूँ।"

हिरण्यक चित्रग्रीव की यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सबके बंधन काटकर चित्रग्रीव से कहा— "मित्र! अब अपने घर जाओ। विपत्ति के समय फिर मुझे याद करना।" उन्हें भेजकर हिरण्यक चूहा अपने बिल में घुस गया। चित्रग्रीव भी मित्रों सहित अपने घर चला गया।

लघुपतनक कौआ यह सब दूर से देख रहा था। वह हिरण्यक के कौशल और उसकी सज्जनता पर मुग्ध हो गया। उसने मन ही मन सोचा— "यद्यपि मेरा स्वभाव है कि मैं किसी का विश्वास नहीं करता, किसी को अपना हितैषी नहीं मानता, तथापि इस चूहे के गुणों से प्रभावित होकर मैं इसे अपना मित्र बनाना चाहता हूँ।"

यह सोचकर वह हिरण्यक के बिल के दरवाजे पर जाकर चित्रग्रीव के समान ही आवाज बनाकर हिरण्यक को पुकारने लगा। उसकी आवाज सुनकर हिरण्यक ने सोचा, यह कौन-सा कबूतर है? क्या इसके बंधन कटने शेष रह गए हैं?

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

हिरण्यक ने पूछा— "तुम कौन हो?"

लघुपतनक— "मैं लघुपतनक नाम का कौआ हूँ।"

हिरण्यक— "मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम अपने घर चले जाओ।"

लघुपतनक— "मुझे तुम से बहुत जरूरी काम है; एक बार दर्शन तो दे दो।"

हिरण्यक— "मुझे तुम्हें दर्शन देने का कोई प्रयोजन दिखाई नहीं देता।"

लघुपतनक— "चित्रग्रीव के बंधन काटते देखकर मुझे तुमसे बहुत प्रेम हो गया है। कभी मैं भी बंधन में पड़ जाऊँगा तो तुम्हारी सेवा में आना पड़ेगा।"

हिरण्यक— "तुम भोक्ता हो, मैं तुम्हारा भोजन हूँ; हम में प्रेम कैसा? जाओ, दो प्रकृति से विरोधी जीवों में मैत्री नहीं हो सकती।"

लघुपतनक— "हिरण्यक! मैं तुम्हारे द्वार पर मित्रता की भीख लेकर आया हूँ। तुम मैत्री नहीं करोगे तो यहीं प्राण दे दूँगा।"

हिरण्यक— "हम सहज-वैरी हैं, हममें मैत्री नहीं हो सकती।"

लघुपतनक— "मैंने तो कभी तुम्हारे दर्शन भी नहीं किए। हममें वैर कैसा?"

हिरण्यक— "वैर दो तरह का होता है— सहज और कृत्रिम। तुम मेरे सहज-वैरी हो।"

लघुपतनक— "मैं दो तरह के वैरों का लक्षण सुनना चाहता हूँ।"

हिरण्यक— "जो वैर कारण से हो वह कृत्रिम होता है, कारणों से ही उस वैर का अंत भी हो सकता है। स्वाभाविक वैर निष्कारण होता है, उसका अंत हो ही नहीं सकता।"

लघुपतनक ने बहुत अनुरोध किया, किंतु हिरण्यक ने मैत्री के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। तब लघुपतनक ने कहा— "यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास न हो तो तुम अपने बिल में छिपे रहो; मैं बिल के बाहर बैठा-बैठा ही तुमसे बातें कर लिया करूँगा।"

हिरण्यक ने लघुपतनक की यह बात मान ली। किंतु, लघुपतनक को सावधान करते हुए कहा— "कभी मेरे बिल में प्रवेश करने की चेष्टा मत करना।" कौआ इस बात को मान गया। उसने शपथ ली कि कभी वह ऐसा नहीं करेगा।

तब से वे दोनों मित्र बन गए। नित्यप्रति परस्पर बातचीत करते थे। दोनों के दिन बड़े सुख से कट रहे थे। कौआ कभी-कभी इधर-उधर से अन्न संग्रह करके चूहे को भेंट में भी देता था। मित्रता में यह आदान-प्रदान स्वाभाविक था। धीरे-धीरे दोनों की मैत्री घनिष्ठ होती गई। दोनों एक क्षण भी एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते थे।

© KTES NOT TO BE REPUBLISHED

बहुत दिन बाद एक दिन आँखों में आँसू भर कर लघुपतनक ने हिरण्यक से कहा— "मित्र! अब मुझे इस देश से विरक्ति हो गई है, इसलिए दूसरे देश में चला जाऊँगा।"

कारण पूछने पर उसने कहा— "इस देश में अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष पड़ गया है। लोग भूखे मर रहे हैं, एक दाना भी नहीं रहा। घर-घर में पक्षियों के पकड़ने के लिए जाल बिछ गए हैं। मैं तो भाग्य से ही बच गया। ऐसे देश में रहना ठीक नहीं है।"

हिरण्यक— "कहाँ जाओगे?"

लघुपतनक— "दक्षिण दिशा की ओर एक तालाब है। वहाँ मन्थरक नाम का एक कछुआ रहता है। वह भी मेरा वैसा ही घनिष्ठ मित्र है जैसे तुम हो। उसकी सहायता से मुझे पेट भरने योग्य अन्न-मांस आदि अवश्य मिल जाएगा।"

हिरण्यक— "यही बात है तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगा।

लघुपतनक— "किंतु, मैं तो आकाश में उड़ने वाला हूँ। मेरे साथ तुम कैसे जाओगे?"

हिरण्यक— "मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर वहाँ ले चलो।"

लघुपतनक यह बात सुनकर प्रसन्न हुआ। हिरण्यक चूहा लघुपतनक कौवे की पीठ पर बैठ गया। दोनों आकाश में उड़ते हुए तालाब के किनारे पहुँचे।

मन्थरक ने जब देखा कि कोई कौआ चूहे को पीठ पर बिठा कर आ रहा है तो वह डर के मारे पानी में घुस गया। लघुपतनक को उसने पहचाना नहीं।

तब लघुपतनक हिरण्यक को थोड़ी दूर छोड़कर पानी में लटकती हुई शाखा पर बैठ कर जोर-जोर से पुकारने लगा— "मन्थरक! मन्थरक!! मैं तुम्हारा मित्र लघुपतनक आया हूँ। आकर मुझसे मिलो।"

लघुपतनक की आवाज सुनकर मन्थरक प्रसन्न होकर बाहर आया। हिरण्यक भी तब वहाँ आ गया और मन्थरक को प्रणाम करके वहीं बैठ गया।

मन्थरक कछुआ, लघुपतनक कौआ और हिरण्यक चूहा वहाँ बैठे-बैठे बातें कर रहे थे कि वहां चित्रांग नाम का हिरन कहीं से दौड़ता-हाँफता आ गया। एक व्याध उसका पीछा कर रहा था। उसे आता देखकर कौआ उड़कर वृक्ष की शाखा पर बैठ गया। हिरण्यक पास के बिल में घुस गया और मन्थरक तालाब के पानी में जा छिपा।

कौवे ने हिरन को अच्छी तरह देखने के बाद मन्थरक से कहा— "मित्र मन्थरक! यह हिरन पानी पीने के लिए तालाब पर आया है।"

मन्थरक— "यह हिरन बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा है और डरा हुआ सा है। इसलिए यह प्यासा नहीं, बल्कि व्याध के डर से भागा हुआ है। देखो तो सही, इसके पीछे व्याध आ रहा है या नहीं?"

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



दोनों की बात हिरन ने सुन ली और बोला— "मन्थरक! मेरे भय का कारण तुम जान गए हो। मैं व्याध के बाणों से डरकर बड़ी कठिनाई से यहाँ पहुँच पाया हूँ। तुम मेरी रक्षा करो। अब तुम्हारी शरण में हूँ। मुझे कोई ऐसी जगह बतलाओ जहाँ व्याध न पहुँच सके।"

मन्थरक ने हिरन को घने जंगलों में भाग जाने की सलाह दी। किंतु लघुपतनक ने ऊपर से देखकर बतलाया कि व्याध दूसरी दिशा में चला गया है, इसलिए अब डर की कोई बात नहीं है। अब चित्रांग की भी लघुपतनक, हिरण्यक और मन्थरक से गाढ़ी मित्रता हो गई।

एक दिन हिरन घूमता हुआ जंगल में चला गया और शाम तक वापस नहीं लौटा। उसके तीनों मित्रों को संदेह होने लगा कि कहीं वह व्याध के जाल में न फँस गया हो; अथवा शेर, बाघ आदि ने उस पर हमला न कर दिया हो। घर में बैठे स्वजन अपने प्रवासी प्रियजनों के संबंध में सदा शंकित रहते हैं।

बहुत देर तक भी चित्रांग हिरन नहीं आया तो मन्थरक कछुए ने लघुपतनक कौवे को जंगल में जाकर हिरन को खोजने की सलाह दी। लघुपतनक ने कुछ दूर जाकर देखा कि वहाँ चित्रांग एक जाल में बँधा हुआ है। लघुपतनक उसके पास गया। उसे देखकर चित्रांग की आँखों में आँसू आ गए। वह बोला— "अब मेरी मृत्यु निश्चित है। अन्तिम समय में तुम्हारे दर्शन कर के मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। प्राण विसर्जन के समय मित्र-दर्शन बड़ा सुखद होता है। मेरे अपराध क्षमा करना।"

लघुपतनक ने धीरज बँधाते हुए कहा— "घबराओ मत! मैं अभी हिरण्यक चूहे को बुला लाता हूँ। वह तुम्हारे जाल काट देगा।"

यह कहकर वह हिरण्यक के पास चला गया और शीघ्र ही उसे पीठ पर बिठाकर ले आया। हिरण्यक अभी जाल काटने की सोच ही रहा था कि लघुपतनक ने वृक्ष के ऊपर से किसी को देखकर कहा— "यह तो बहुत बुरा हुआ।"

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

हिरण्यक ने पूछा— "क्या कोई व्याध आ रहा है?"

लघुपतनक— "नहीं, व्याध तो नहीं, किंतु मन्थरक कछुआ इधर चला आ रहा है।"

हिरण्यक— "तब तो खुशी की बात है। दुखी क्यों होते हो?"

लघुपतनक— "दुखी इसलिए होता हूँ कि व्याध के आने पर मैं ऊपर उड़ जाऊँगा, हिरण्यक बिल में घुस जाएगा, चित्रांग भी छलागें मारकर घने जंगल में घुस जाएगा; लेकिन मन्थरक कैसे अपनी जान बचाएगा? यही सोचकर चिंतित हो रहा हूँ।"

मन्थरक के वहाँ आने पर हिरण्यक ने मन्थरक से कहा— "मित्र! तुमने यहाँ आकर अच्छा नहीं किया। अब भी वापस लौट जाओ, कहीं व्याध न आ जाए।"

इसीलिए मन्थरक ने कहा— "मित्र! मैं अपने मित्र को आपत्ति में जानकर वहाँ नहीं रह सका। सोचा, उसकी आपत्ति में हाथ बटाऊँगा, तभी चला आया।"

ये बातें हो ही रही थीं कि उन्होंने व्याध को उसी ओर आते देखा। उसे देखकर चूहे ने उसी क्षण चित्रांग के बंधन काट दिए। चित्रांग भी उठकर घूम-घूमकर पीछे देखता हुआ आगे भाग खड़ा हुआ। लघुपतनक वृक्ष पर उड़ गया। हिरण्यक पास के बिल में घुस गया।

व्याध अपने जाल में किसी को न पाकर बड़ा निराश हुआ। वहाँ से वापस जाने को मुड़ा ही था कि उसकी दृष्टि धीरे-धीरे जाने वाले मन्थरक पर पड़ गई। उसने सोचा, "आज हिरन तो हाथ आया नहीं, कछुए को ही ले चलता हूँ। कछुए को ही आज भोजन बनाऊँगा। उससे ही पेट भरूँगा।" यह सोचकर वह कछुए को जाल में बाँधकर कंधे पर डालकर चल दिया। उसे ले जाते देख हिरण्यक और लघुपतनक को बड़ी चिंता हुई। दोनों मित्र मन्थरक को बड़े प्रेम और आदर से देखते थे। चित्रांग ने भी मन्थरक को व्याध के कन्धों पर देखा तो व्याकुल हो गया। तीनों मित्र मन्थरक की मुक्ति का उपाय सोचने लगे।

कौवे ने तब एक उपाय ढूँढ निकाला। वह यह कि चित्रांग व्याध के मार्ग में तालाब के किनारे जाकर लेट जाए। मैं तब उसे चोंच मारने लगूँगा। व्याध समझेगा कि हिरन मरा हुआ है। वह मन्थरक को जमीन पर रखकर इसे लेने के लिए जब आएगा तो हिरण्यक तीव्रता से मन्थरक के बंधन काट दे। मन्थरक तालाब में घुस जाए और चित्रांग छलांगें मारकर घने जंगल में चला जाय। मैं उड़कर वृक्ष पर चला ही जाऊँगा। सभी बच जाएँगे, मन्थरक भी छूट जाएगा!

तीनों मित्रों ने यही उपाय किया। चित्रांग तालाब के किनारे मृतवत जा लेटा। कौआ उसकी गरदन पर सवार होकर चोंच चलाने लगा। व्याध ने देखा तो समझा कि हिरन जाल से छूट कर दौड़ता-दौड़ता यहाँ मर गया है। उसे लेने के लिए वह जाल-बद्ध कछुए को जमीन पर छोड़कर

© TBS NOT TO BE REPUBLISHED



आगे बढ़ा तो हिरण्यक ने अपने तीखे दाँतों से जाल काट दिया। मन्थरक पानी में घुस गया। चित्रांग भी भाग गया।

व्याध ने चित्रांग को दौड़ते देखा तो आश्चर्य में डूब गया। फिर देखा कि कछुआ भी जाल से निकलकर भाग गया है, तब वह और भी विस्मित हुआ और निराश होकर चला गया।

उधर चारों मित्र लघुपतनक, मन्थरक, हिरण्यक और चित्रांग प्रसन्नता से फूले नहीं समाते थे। मित्रता के बल पर ही चारों ने व्याध से मुक्ति पाई थी।

मित्रता में बड़ी शक्ति है। हमें अपने मित्रों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

अभी आपने जो कहानी पढ़ी वह *पंचतंत्र* से ली गई है। *पंचतंत्र* हमारे देश की ऐसी अद्‌भुत पुस्तक है जो आज भी विश्व में मनोरंजन और नैतिक ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से पढ़ी-पढ़ाई जाती है। अपने पुस्तकालय में से *पंचतंत्र* की कहानियों की पुस्तक खोजकर पढ़िए और इसकी कोई एक कहानी कक्षा में सुनाइए।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

3 एक आशीर्वाद

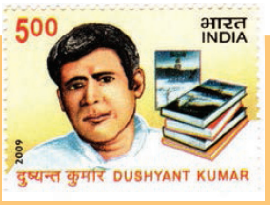
0871CH03

जा,
तेरे स्वप्न बड़े हों
भावना की गोद से उतरकर
जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें
चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए
रूठना-मचलना सीखें
हँसें
मुसकराएँ
गाएँ
हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ
उँगली जलाएँ
अपने पाँवों पर खड़े हों।
जा,
तेरे स्वप्न बड़े हों।

— *दुष्यंत कुमार*

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

लेखक से परिचय



(1933–1975)

दुष्यंत कुमार हिंदी के लोकप्रिय रचनाकारों में से एक हैं। इनका जन्म बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। बहुत कम समय में ही इन्होंने हिंदी साहित्य को विविधतापूर्ण रचनाओं एवं जीवंत भाषा से समृद्ध किया। *साये में धूप* इनका सर्वाधिक चर्चित गज़ल संग्रह है। इनका संपूर्ण रचना-संसार *दुष्यंत कुमार रचनावली* चार खंडों में प्रकाशित है।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

@KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. कविता में किसे संबोधित किया गया है?
   - युवा वर्ग को
   - नागरिकों को
   - बच्चों को
   - श्रमिकों को
2. "तेरे स्वप्न बड़े हों" पंक्ति में 'स्वप्न' से क्या आशय है?
   - कल्पना की उड़ान भरना
   - आकांक्षाएँ और रुचियाँ रखना
   - बहुत-सी उपलब्धियाँ पाना
   - बड़े लक्ष्य निर्धारित करना





3. "उँगली जलाएँ" पंक्ति में उँगली जलाने का भाव है—
   - चुनौतियों को स्वीकार करना
   - प्रकाश का प्रसार करना
   - अग्नि के ताप का अनुभव करना
   - कष्टों से नहीं घबराना
4. "अपने पाँवों पर खड़े हों" पंक्ति से क्या आशय है?
   - अपने पैरों पर खड़े होना
   - सफलता प्राप्त करना
   - कठिनाइयों का सामना करना
   - आत्मनिर्भर होना

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों को उनके सही भाव अथवा संदर्भों से मिलाइए।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	भावना की गोद से उतरकर जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें	1. विविध ज्ञान के प्रति आकृष्ट होना और उसे पाने की ललक होना
2.	हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ	2. सपनों को आनंद और मुस्कुराहटों में बदलें। कठिन परिस्थितियों में भी मनोबल बनाए रखें।
3.	चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें	3. भावनाओं में न बहकर वास्तविकता का सामना करना
4.	...हँसें/मुसकराएँ/गाएँ	4. असंभव से लगने वाले लक्ष्यों के लिए हठ और प्रयास करना



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(क) "जा,
तेरे स्वप्न बड़े हों"

(ख) "जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें"

(ग) "चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए
रूठना-मचलना सीखें"





अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) कविता में सपनों के बड़े होने की बात की गई है। आपके अनुसार बड़े सपने कौन-कौन से हो सकते हैं और क्यों?

(ख) "हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ/उँगली जलाएँ" पंक्ति में सपनों और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ललक की बात की गई है। ललक के साथ और क्या-क्या होना आवश्यक है और क्यों? (संकेत— योजना, प्रयास आदि)

(ग) कल्पना कीजिए कि आपका सपना ही आपका मित्र है। आपको उससे बातचीत करनी हो तो क्या बात करेंगे?

(घ) यदि आप किसी को आशीर्वाद देना चाहते हों तो आप किसे और क्या आशीर्वाद देंगे और क्यों?



कविता की रचना

इस कविता में सपने को मनुष्य की तरह हँसते, मुसकराते, गाते हुए बताया गया है। ध्यान से देखें तो इस कविता में इस प्रकार की अन्य विशेषताएँ भी दिखाई देंगी। उन्हें लिखिए और कक्षा में उन पर चर्चा कीजिए।



सृजन

इस कविता के आरंभ में एक ही संज्ञा शब्द है 'स्वप्न'। इस शब्द को केंद्र में रखते हुए अनेक क्रिया शब्दों का ताना-बाना बुना गया है, जैसे— चलना, रूठना, मचलना, सीखना, हँसना, मुस्कुराना, गाना, ललचाना और इस प्रकार कविता पूरी हो जाती है। आप भी किसी एक संज्ञा शब्द के साथ विभिन्न क्रिया शब्दों का प्रयोग करते हुए अपनी कविता बनाकर कक्षा में सुनाइए।

उदाहरण के लिए—



बादल को
घिरते देखा है,
गरजते देखा है,
बरसते देखा है,
_____ .



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



कविता का शीर्षक

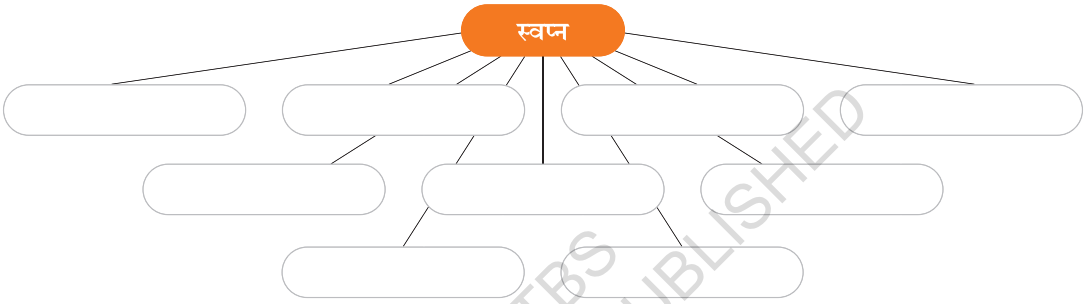


इस कविता का शीर्षक 'एक आशीर्वाद' है जो कविता में कहीं भी प्रयुक्त नहीं हुआ है। यदि इस कविता की ही किसी पंक्ति या शब्द को कविता का शीर्षक बनाना हो तो आप कौन-सी पंक्ति या शब्द चुनेंगे और क्यों?



भाषा की बात

(क) नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'स्वप्न' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—



(ख) कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं और उनके सामने कुछ अन्य शब्द भी दिए गए हैं। उन शब्दों पर घेरा बनाइए जो समान अर्थ न देते हों—

शब्द	अन्य शब्द			
पृथ्वी	धरा	वसुधा	अवनि	सुता
चाँद	मधुकर	शशि	निशाकर	मयंक
तारे	नक्षत्र	सोम	तारक	उडुगण
रोशनी	प्रकाश	लालिमा	उजाला	आलोक
स्वप्न	सपना	इच्छा	यथार्थ	कल्पना
दीया	दीन	ज्योति	दीपक	प्रदीप

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



आना-जाना

'आना' और 'जाना' दो महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं। कक्षा में दो समूह बनाइए। एक समूह का नाम 'आना' और दूसरे समूह का नाम 'जाना' होगा। अब अपने-अपने समूह में इन दोनों क्रियाओं का प्रयोग करते हुए सार्थक वाक्य बनाइए और उन्हें चार्ट पेपर पर चिपकाकर अपनी कक्षा में लगाइए।



डायरी

हँसें-मुसकराएँ-गाएँ

अपने किसी एक दिन की समस्त गतिविधियों पर ध्यान दीजिए और अपनी डायरी में लिखिए कि आप दिनभर में कब-कब हँसे, कब-कब मुसकराए, कब-कब गाए, कब-कब रूठे, कब-कब मचले?



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) कविता के माध्यम से बड़े लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें पूरा करने का आशीर्वाद दिया गया है। दिन-प्रतिदिन के जीवन में आपको अपने माता-पिता, अध्यापक एवं परिजनों से किस तरह के आशीर्वाद मिलते हैं? अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(ख) आप भी अपने से छोटों के प्रति किसी न किसी प्रकार से शुभेच्छा प्रकट करते हैं, उन्हें लिखिए।



सपनों की बातें

(क) आप क्या करना चाहते हैं और क्या पाना चाहते हैं? उन्हें एक परची पर लिखें। परची पर अपना नाम लिखना आवश्यक नहीं है। अपने अध्यापक द्वारा लाए गए डिब्बे में अपनी-अपनी परची को डाल दें। अध्यापक एक-एक करके इन परचियों पर लिखे सपनों को पढ़कर सुनाएँ। सभी विद्यार्थी अपने-अपने सुझाव दें कि उन सपनों को पूरा करने के लिए—

- किस तरह के प्रयत्न करने होंगे?
- किस तरह से योजना बनानी होगी?
- किससे और किस प्रकार का सहयोग लिया जा सकता है?
- लक्ष्य-प्राप्ति में संभावित चुनौतियाँ कौन-कौन सी हो सकती हैं?



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



हमारे सपने

आपके माता-पिता या अभिभावक आपकी आवश्यकताओं और इच्छाओं को जानते-समझते हैं। वे उन्हें पूरा करने के लिए यथासंभव प्रयत्न करते हैं। अपने माता-पिता या अभिभावक से उनके द्वारा देखे गए सपने और इच्छाओं के बारे में पूछिए कि वे क्या-क्या करना चाहते थे या चाहते हैं? नीचे दी गई तालिका में उन सपनों को लिखिए। आप इस तालिका को और बढ़ा सकते हैं।

	घर के सदस्यों के सपने
माता	
पिता	
दादा	
दादी	
नाना	
नानी	
बहन	
भाई	

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

सबके सपने

प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने में बहुत-से लोग सहयोग देते हैं, जैसे— शाक विक्रेता, स्वच्छताकर्मी, रिक्शाचालक, सुरक्षाकर्मी आदि। इनमें से किसी एक से साक्षात्कार कीजिए और उनके सपनों के विषय में जानिए। साक्षात्कार के समय कौन-कौन से प्रश्न हो सकते हैं? उनकी एक सूची भी बनाइए।

झरोखे से

आपने पढ़ा कि 'एक आशीर्वाद' कविता में सपनों के बड़े होने की बात की गई है। अब आप पढ़िए सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का एक प्रेरक उद्‌बोधन जिसमें वे न केवल सपने देखने की बात करते हैं, बल्कि सपनों को पूरा करने की योजना और प्रक्रिया के विषय में भी बताते हैं—



सपनों की उड़ान

सपने वह नहीं होते जो आप नींद में देखते हैं, सपने वह होते हैं जो आपको सोने नहीं देते। अपने सपने पूरे करने के लिए आपको जागते रहना होता है, पूरी तरह आँखें खोलकर जागते रहना होता है।

आज जितनी संभावनाएँ हैं, उतनी अब तक के समूचे इतिहास में पहले कभी नहीं थीं। इक्कीसवीं सदी ऐसे अनुभव पैदा कर रही है जिन्हें मानव के विकास की पिछली बीस शताब्दियों में असंभव समझा जाता था। ऐसे माहौल में जब प्रौद्योगिकी और नित नई खोजों के बल पर मानव सभ्यता तरक्की करती जा रही है, इंसान में छिपी संभावनाओं का भी तेजी से विस्तार होता जा रहा है। लेकिन इन अवसरों का अनुभव करने के लिए हमारे पास जो समय है वह उतना का उतना ही है और आज के युवा इसी दुविधा में हैं। युवा चाहते हैं कि उनके सामने जितने किस्म के अनुभव उपलब्ध हैं, वह सबका फायदा उठा सकें, जो कि उन्हें मिलना भी चाहिए लेकिन जैसे-जैसे दुनिया का दायरा बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे हमें खुद को कुछ खास विषयों के संकरे दायरे में सीमित कर लेना पड़ रहा है। मुझे नहीं लगता कि ऐसा करना सही है। मेरा सपना है कि संसार के हर युवा को संसार के वह सारे अनुभव मिल सकें जिसकी उन्हें चाह हो। लेकिन इसे कैसे संभव बनाया जा सकता है?

इसे संभव बनाने के दो तरीके हैं। एक तो यह कि हम कुछ ऐसा करें कि हमारे पास जो समय उपलब्ध है उसे हम बढ़ा सकें। दूसरा यह कि हमारे पास जो समय है हम उतने ही समय में जितना काम कर सकते हैं, जितना कुछ हासिल कर सकते हैं उसकी मात्रा बढ़ा दें। इन दोनों जीवन-लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया जाए, यह समझ लेने से दूसरी हर चीज तक पहुँचने के दरवाजे खुद-ब-खुद खुल जाएँगे। यही वह लंबी छलांग है जिसका मानवता को अब तक इंतजार था और जो हमें विकास क्रम के अगले चरण तक पहुँचा सकती है।

— डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



साझी समझ

आपने 'एक आशीर्वाद' कविता पढ़ी और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का उपर्युक्त उद्‌बोधन भी पढ़ा। अब आप इन दोनों पर कक्षा में अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।



खोजबीन के लिए

कला, विज्ञान, राजनीति, खेलकूद, मनोरंजन आदि क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्तियों ने अपने-अपने सपनों को पूरा करने की संघर्ष यात्रा के बारे में लिखा है। उन्होंने अपने सपनों को साकार करने के लिए किस तरह से योजना बनाई, क्या-क्या संघर्ष किए? पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से ऐसे व्यक्तियों के बारे में पढ़िए।



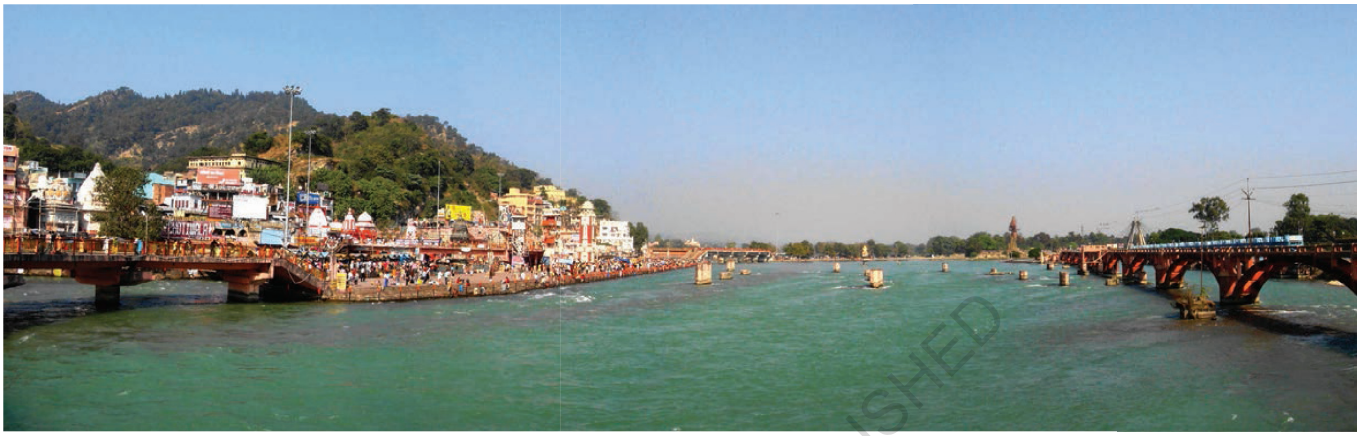
NOT TO BE REPUBLISHED

4 हरिद्वार

('कविवचन सुधा' 14 अक्टूबर सन् 1871 ई.)

0871CH04





Link Panoramic view of har ki pauri view2.jpg (Auther: kumravels)

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध रचनाकार भारतेंदु हरिश्चंद्र अपनी यात्राओं के लिए चर्चित रहे हैं। उन्होंने भारत के अनेक गाँवों और नगरों की यात्राएँ की और उनके विषय में पत्र-पत्रिकाओं में लिखा भी। प्रकृति, इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व का अध्ययन करने में यात्राओं से उन्हें बहुत सहायता मिली। वे मानते थे कि शिक्षा की पूर्ति पुस्तकों से ही नहीं यात्राओं से भी होती है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र 1871 ई. में हरिद्वार की यात्रा पर गए थे। वे लिखते हैं— "मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है।" हरिद्वार की प्रकृति, वहाँ के पर्वतों, पक्षियों, वृक्षों और कलकल बहती गंगा, वहाँ के घाटों, लोगों, दुकानों और गंगा तट के मनोरम दृश्यों को देखकर वे अति आनंदित हुए। इस पाठ में उन्होंने *कविवचन सुधा* पत्रिका के संपादक के नाम पत्र लिखते हुए अपनी उसी हरिद्वार-यात्रा का रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है। इस पत्र में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप लगभग 150 वर्ष पुराना है।

श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!

मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है कि मैं उस पुण्य भूमि का वर्णन करता हूँ जहाँ प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है। यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है जिन पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है और बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं। अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़;



यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं। सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं। इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं। वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी। एक ओर त्रिभुवन पावनी श्री गंगा जी की पवित्र धारा बहती है जो राजा भगीरथ के उज्ज्वल कीर्ति की लता-सी दिखाई देती है। जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है, रंग जल का स्वच्छ और श्वेत है और अनेक प्रकार के जल-जंतु कल्लोल करते हुए। यहाँ श्री गंगा जी अपना नाम नदी सत्य करती हैं अर्थात् जल के वेग का शब्द बहुत होता है और शीतल वायु नदी के उन पवित्र छोटे-छोटे कनों को लेकर स्पर्श ही से पावन करता हुआ संचार करता है। यहाँ पर श्री गंगा जी दो धारा हो गई हैं— एक का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से, इन दोनों धारों के बीच में एक सुंदर नीचा पर्वत है और नील धारा के तट पर एक छोटा-सा सुंदर चुटीला पर्वत है और उसके शिषर पर चण्डिका देवी की मूर्ति है। यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है और यहीं स्नान भी होता है। विशेष आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं। यों तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं। श्री गंगा जी का पाट भी बहुत छोटा है पर वेग बड़ा है, तट पर राजाओं की धर्मशाला यात्रियों के उतरने के हेतु बनी हैं और दुकानें भी बनी हैं पर रात को बंद रहती हैं। यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि इच्छा

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



Link: Har ki pauri panoramic view1.jpg (Auther: kumravels)

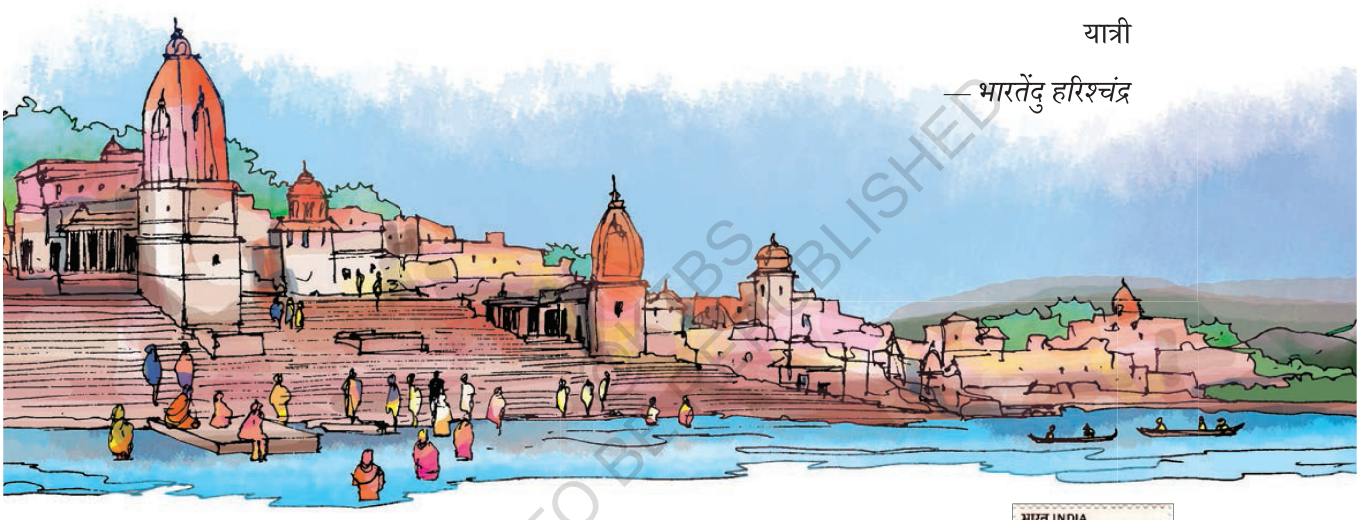
क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं। पंडे दुकानदार इत्यादि कनखल व ज्वालापुर से आते हैं। पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं। इस क्षेत्र में पाँच तीर्थ मुख्य हैं हरिद्वार, कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल। हरिद्वार तो हरि की पैंड़ी पर नहाते हैं, कुशावर्त्त भी उसी के पास है, नीलधारा वही दूसरी धारा, विल्व पर्वत भी पास ही एक सुहाना पर्वत है जिस पर विल्वेश्वर महादेव की मूर्ति है और कनखल तीर्थ इधर ही है, यह कनखल तीर्थ बड़ा उत्तम है। किसी काल में दक्ष ने यहीं यज्ञ किया था और यहीं सती ने शिव जी का अपमान न सहकर अपना शरीर भस्म कर दिया। यहाँ कुछ छोटे-छोटे घर भी बने हैं। और भारामल जैकृष्णदास खत्री यहाँ के प्रसिद्ध धनिक हैं। हरिद्वार में यह बखेड़ा कुछ नहीं है और शुद्ध निर्मल साधुओं के सेवन योग्य तीर्थ है। मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है। मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है। चारों ओर से शीतल पवन आती थी। यहाँ रात्रि को ग्रहण हुआ और हम लोगों ने ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया। वैसे ही मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे। निदान इस उत्तम क्षेत्र में जितना समय बीता, बड़े आनंद से बीता। एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया। जल के छलके पास ही ठंढे-ठंढे आते थे। उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था। चित्त में बारंबार ज्ञान,

वैराग्य और भक्ति का उदय होता था। झगड़े-लड़ाई का कहीं नाम भी नहीं था। यहाँ और भी कई वस्तु अच्छी बनती हैं, जनेऊ यहाँ का अच्छा महीन और उज्ज्वल बनता है। यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है। निदान यहाँ जो कुछ है, अपूर्व है और यह भूमि साक्षात विरागमय साधुओं और विरक्तों के सेवन योग्य है। और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ और अपने वर्णन द्वारा आपके पाठकों को इस पुण्यभूमि का वृत्तांत विदित करके मौनावलंबन करता हूँ। निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।

आपका मित्र

यात्री

— भारतेंदु हरिश्चंद्र



NOT TO BE REPUBLISHED © NCERT

लेखक से परिचय



(1850–1885)

'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' का उद्घोष करने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कविता, नाटक, निबंध और यात्रा-वृत्तांत आदि अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया। इन्होंने *कविवचन सुधा*, *हरिश्चंद्र मैगजीन*, *हरिश्चंद्र चंद्रिका* और स्त्रियों के लिए *बालाबोधिनी* पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। इनकी रचनाओं में समाज-सुधार, राष्ट्र-प्रेम, अंग्रेजी शासन का विरोध, स्वाधीनता की भावना के स्वर सुनाई देते हैं। इन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है। *सत्य हरिश्चन्द्र*, *भारत-दुर्दशा*, *अंधेर नगरी और सरयूपार की यात्रा* इनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

पाठ से

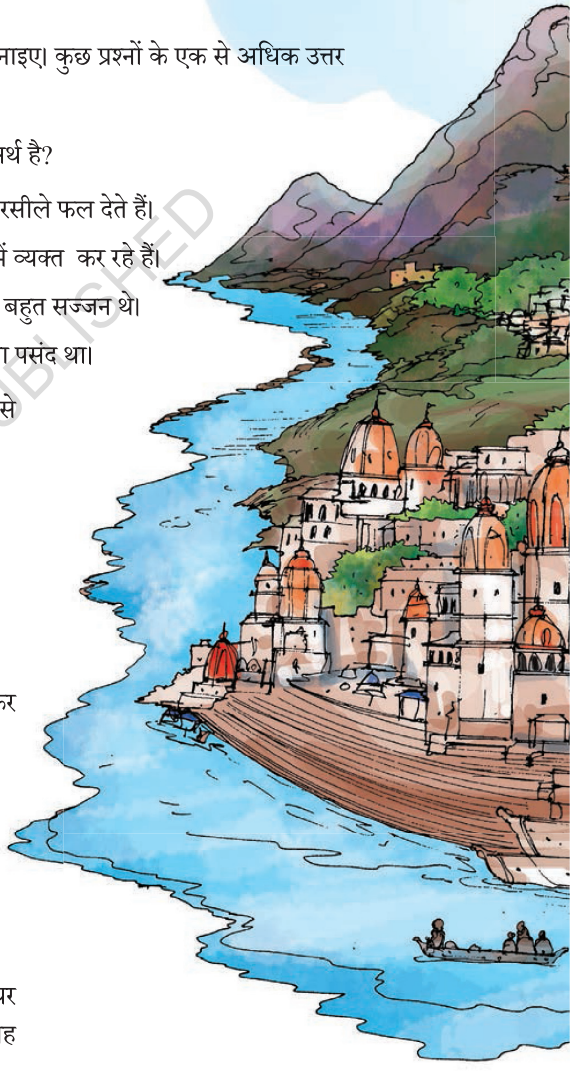
आइए, अब हम इस पत्र को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।



मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

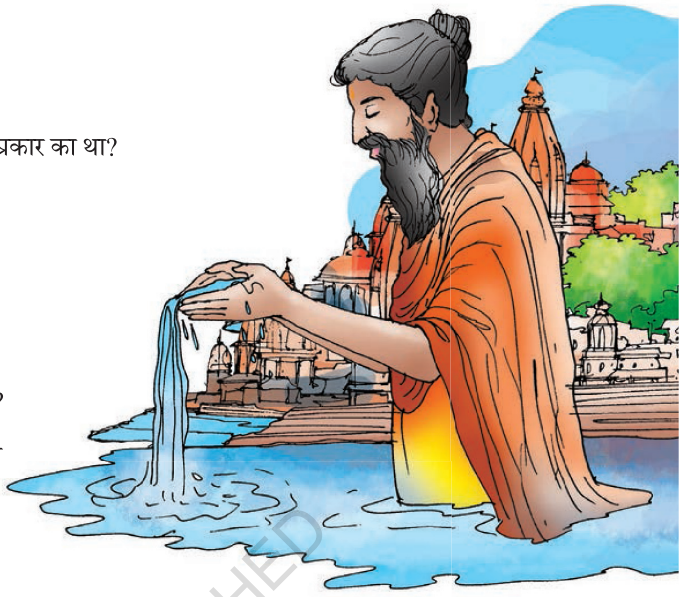
1. "सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं" का क्या अर्थ है?
   - लेखक के अनुसार सज्जन लोग बिना पूछे स्वादिष्ट रसीले फल देते हैं।
   - लेखक फलदार वृक्षों की उदारता को मानवीय रूप में व्यक्त कर रहे हैं।
   - लेखक का मानना था कि हरिद्वार के सभी दुकानदार बहुत सज्जन थे।
   - लेखक को पत्थर मारकर पके हुए फल तोड़कर खाना पसंद था।
2. "वैराग्य और भक्ति का उदय होता था" इस कथन से लेखक का कौन-सा भाव प्रकट होता है?
   - शारीरिक थकान और मानसिक बेचैनी
   - आर्थिक संतोष और मानसिक विकास
   - मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव
   - सामाजिक सद्भाव और पारिवारिक प्रेम
3. "पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल से बढ़कर था" इस वाक्य का सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्ष क्या है?
   - संतुष्टि में सुख होता है।
   - सुखी लोग पत्थर पर भोजन करते हैं।
   - लेखक के पास सोने की थाली नहीं थी।
   - पत्थर पर रखा भोजन अधिक स्वादिष्ट होता है।
4. "एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया।" यह प्रसंग किस मूल्य को बढ़ावा देता है?
   - अंधविश्वास और लालच
   - मानवता और देशप्रेम



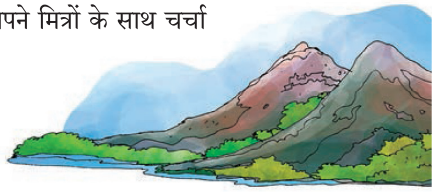
© CBSE NOT TO BE REPUBLISHED

- सादगी और आत्मनिर्भरता
- स्वच्छता और प्रकृति प्रेम

5. लेखक का हरिद्वार अनुभव मुख्यतः किस प्रकार का था?
   - राजनीतिक
   - आध्यात्मिक
   - सामाजिक
   - प्राकृतिक
6. पत्र की भाषा का एक मुख्य लक्षण क्या है?
   - कठिन शब्दों का प्रयोग और बोझिलता
   - मुहावरों का अधिक प्रयोग
   - सरलता और चित्रात्मकता
   - जटिलता और संक्षिप्तता



(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?





मिलकर करें मिलान

पाठ से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आपस में चर्चा कीजिए और इनके उपयुक्त संदर्भों से इनका मिलान कीजिए—

क्रम	शब्द	संदर्भ
1.	हरिद्वार	1. मान्यताओं के अनुसार दुर्गा का एक रूप।
2.	गंगा	2. यह अठारह पुराणों में से सर्वप्रसिद्ध एक पुराण है। इसमें अधिकांश श्री कृष्ण संबंधी कथाएँ हैं।
3.	भगीरथ	3. यह भारत के उत्तराखंड राज्य में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है।
4.	चण्डिका	4. यह एक पेड़ का नाम है। यह दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलता है। इस पेड़ की सुगंधित छाल दवा और मसाले के काम में आती है। इसे दारचीनी भी कहते हैं।
5.	भागवत	5. यह भारतवर्ष की एक प्रधान नदी है जो हिमालय से निकलकर लगभग 1560 मील पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अनेक नाम हैं, जैसे— भागीरथी, त्रिपथगा, अलकनंदा, मंदाकिनी, सुरनदी आदि।
6.	दालचीनी	6. ये अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा थे। कहा जाता है कि ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे। इसीलिए गंगा का एक नाम 'भागीरथी' भी है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED





मिलकर करें चयन

(क) पाठ से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो निष्कर्ष दिए गए हैं— एक सही और एक भ्रामक। अपने समूह में इन पर विचार कीजिए और उपयुक्त निष्कर्ष पर सही का चिह्न लगाइए।

क्रम	पंक्ति	निष्कर्ष
1.	पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।	• लताओं का फैलना सज्जनों की शुभ इच्छाओं की तरह सौम्यता और सुंदरता को दर्शाता है। • सज्जनों की शुभ इच्छाएँ लताओं के समान फैल जाती हैं।
2.	बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं।	• वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहने के लिए विवश हैं। • वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहते हुए तपस्या करते हैं।
3.	इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं।	• यहाँ के पक्षी प्रकृति में सुरक्षित अनुभव करते हैं, इसलिए वे निडर होकर कल्लोल करते हैं। • यहाँ के पक्षी नगर से डरकर इस जगह आ गए हैं इसलिए वे कल्लोल करते हैं।
4.	जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है।	• गंगाजल की ठंडक और मिठास का अनुभव बहुत मनोहारी है। • गंगाजल की शीतलता और मिठास से शक्कर और बरफ बनाई जा सकती है।
5.	एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया।	• लेखक ने भोजन इसलिए बनाया क्योंकि गंगा का पानी बहुत गरम था और वह पकाने में सहायक था। • लेखक ने गंगा के समीप बैठकर भोजन किया, जिससे उनकी प्रकृति से निकटता झलकती है।
6.	निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।	• लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर कहीं स्थान दिया जाए, यानी इसे पढ़ा और सँजोया जाए। • लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर प्रकाशित किया जाए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED





पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है।"

(ख) "अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"

सोच-विचार के लिए



पाठ को पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) "और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ..."

लेखक का यह वाक्य क्या दर्शाता है? क्या आपने कभी किसी स्थान को छोड़कर ऐसा अनुभव किया है? कब-कब?

(संकेत— किसी स्थान से लौटने के बाद भी उसी के विषय में सोचते रहना)

(ख) "पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।"

लेखक का यह कथन आज के समाज में कितना सच है? क्या अब भी ऐसे संतोषी लोग मिलते हैं? अपने विचार उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) "मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है।"

आपके विचार से लेखक ने उस स्थान को 'टिकने योग्य' क्यों कहा है? उस स्थान में कौन-कौन सी विशेषताएँ होंगी जो उसे 'टिकने योग्य' बनाती होंगी?

(संकेत— केवल आराम, सुविधा या कोई और कारण भी।)

(घ) "फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"

इस वाक्य के माध्यम से आपको वृक्षों के महत्व के बारे में कौन-कौन सी बातें सूझ रही हैं?

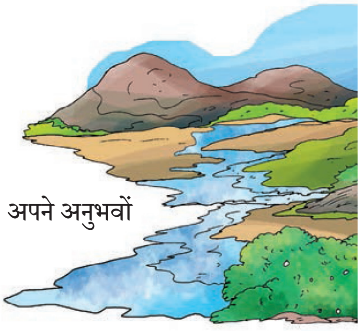
अनुमान और कल्पना से



(क) "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।"

कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार में हैं। आप वहाँ क्या-क्या करना चाहेंगे?

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



(ख) "जल के छलके पास ही ठंढे-ठंढे आते थे।"

कल्पना कीजिए कि आप गंगा के तट पर हैं और पानी के छींटे आपके मुँह पर आ रहे हैं। अपने अनुभवों को अपनी कल्पना से लिखिए।

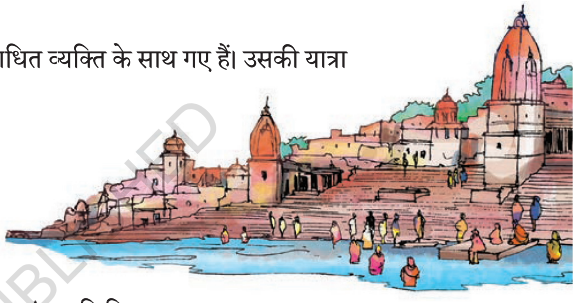
(ग) "सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।"

यदि पेड़-पौधे सच में मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो क्या होगा?

(घ) "यहाँ पर श्री गंगा जी दो धारा हो गई हैं— एक का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से।"

इस पाठ में 'गंगा' शब्द के साथ 'श्री' और 'जी' लगाया गया है। आपके अनुसार उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

(ङ) कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार एक श्रवणबाधित या दृष्टिबाधित व्यक्ति के साथ गए हैं। उसकी यात्रा को अच्छा बनाने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।





लिखें संवाद

(क) "मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे।"

लेखक और कल्लू जी के बीच हरिद्वार यात्रा पर एक काल्पनिक संवाद लिखिए।

(ख) "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।"

लेखक और प्रकृति के बीच एक कल्पनात्मक संवाद तैयार कीजिए— जैसे पर्वत बोल रहे हों।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



'है' और 'हैं' का उपयोग

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए—

- विशेष आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं।
- यों तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं।

आप जानते ही हैं कि एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'है' का प्रयोग किया जाता है और बहुवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'हैं' का। सोचिए, 'गंगा' शब्द एकवचन है, फिर भी इसके साथ 'हैं' क्यों लिखा गया है?

इसका कारण यह है कि कभी-कभी हम आदर-सम्मान प्रदर्शित करने के लिए एकवचन संज्ञा शब्दों को भी बहुवचन के रूप में प्रयोग करते हैं। इसे 'आदरार्थ बहुवचन' प्रयोग कहते हैं। उदाहरण के लिए—

- मेरे पिता जी सो रहे हैं।
- भारत के प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं।



अब 'आदरार्थ बहुवचन' को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं _____, वे अभी सभा में उपस्थित _____।
2. माता-पिता हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते _____, हमें उनका कहना मानना चाहिए।
3. मेरी बहन बाजार जा रही _____ वहाँ से किताबें ले आएगी।
4. बाहर फेरीवाला _____ _____। _____ बुला लाओ।
5. डाकिया जी आए _____। उन्हें भी बुला लाओ।
6. आप तो बहुत दिन बाद _____, _____ का स्वागत है।
7. डॉक्टर साहब बहुत विद्वान _____, _____ से परामर्श लेना चाहिए।
8. आपके माता-पिता कहाँ _____? क्या मैं _____ से मिल सकता हूँ?
9. ये हमारे हिंदी के अध्यापक _____, हम _____ से बहुत-कुछ सीखते-समझते हैं।
10. बंदर पेड़ पर उछल-कूद कर _____।



भावों की पहचान

प्रेम,	संतोष,	भक्ति,	श्रद्धा,	वैराग्य,	आश्चर्य,
करुणा,	हास्य,	शांति,	परोपकार,	दया,	दुख

नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। सोचिए कि इनमें कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है? पहचानिए और चुनकर लिखिए—

1. उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।

_____

2. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।

_____

3. पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं।

_____

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

4. हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।

5. सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।





काल की पहचान

"यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है और यहीं स्नान भी होता है।"

आप जानते ही होंगे कि काल के तीन भेद होते हैं— भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल। परस्पर चर्चा करके पता लगाइए कि ऊपर दिए गए वाक्य में कौन-सा काल प्रदर्शित हो रहा है? सही पहचाना, यह वाक्य वर्तमान काल को प्रदर्शित कर रहा है।

(क) नीचे दी गई पाठ की इन पंक्तियों को पढ़कर बताइए, इनमें क्रिया कौन-से काल को प्रदर्शित कर रही है? (भूतकाल/वर्तमान/भविष्य)

1. निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा। _____

2. यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है। _____

3. वृक्ष ऐसे हैं कि पत्थर मारने से फल देते हैं। _____

4. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था। _____

5. मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। _____

(ख) अब इन वाक्यों के काल को अन्य कालों में बदलकर लिखिए और नए वाक्य बनाइए।



पत्र की रचना

"और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ ..."

इस पंक्ति में लेखक संपादक महोदय को संबोधित करके अपनी बात लिख रहे हैं। आप जानते ही होंगे कि पत्र जिस व्यक्ति के लिए लिखा जाता है, उसे संबोधित किया जाता है। पत्र के अंत में अपना नाम लिखा जाता है ताकि पत्र पाने वाले को पता चल सके कि पत्र किसने लिखा है।



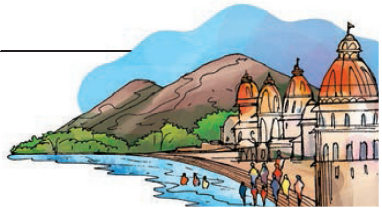
© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

नीचे इस पत्र की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं से जुड़े वाक्यों से इनका मिलान कीजिए—

क्रम	पत्र की विशेषताएँ	पत्र से उदाहरण
1.	**व्यक्तिपरकता**— पत्र लेखन में लेखक के विचार, अनुभव और भावनाएँ प्रमुख होते हैं।	"ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया…
2.	**संवादात्मकता**— पत्र संवाद का रूप है; पाठक से सीधा संवाद होता है।	श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!
3.	**स्वाभाविक शैली**— भाषा कृत्रिम नहीं होती; भावनाओं के अनुरूप होती है।	आपका मित्र — यात्री
4.	**व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन**— जहाँ लेखक अपने वास्तविक अनुभव को साझा करता है	मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है…
5.	**अभिवादन या संबोधन**— पत्र का आरंभ, जिसमें संबोधित व्यक्ति को आदरपूर्वक संबोधित किया जाता है।	हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिकता, साधु-संन्यासियों का जीवन, नदी, पर्वत, जल, गंगा स्नान आदि का अत्यंत विस्तार से वर्णन। जैसे— "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है…"
6.	**हस्ताक्षर**— लेखक अपने नाम या संबंध से पत्र को समाप्त करता है।	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ... निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।
7.	**उपसंहार और निवेदन**— लेखक पत्र समाप्त करता है और अपनी इच्छा या निवेदन प्रकट करता है।	एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके…
8.	**मुख्य विषय-वस्तु**	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ…

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

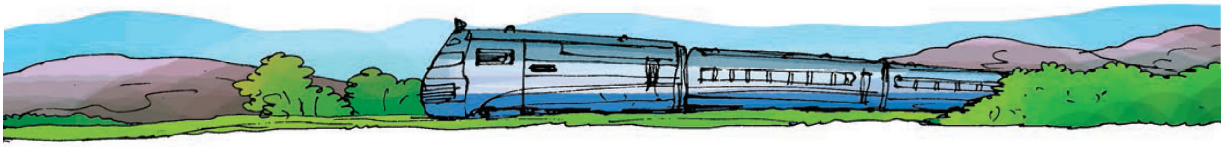
आप एक विशेषता को एक से अधिक वाक्यों से भी जोड़ सकते हैं।





पत्र

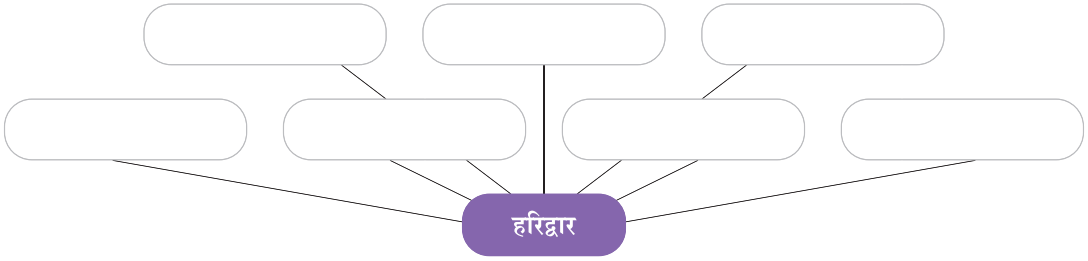
आपने जो यात्रा-वर्णन पढ़ा है, इसे भारतेंदु हरिश्चंद्र ने एक संपादक को पत्र के रूप में लिखकर भेजा था। आप भी अपनी किसी यात्रा के विषय में अपने किसी परिचित को पत्र लिखकर बताइए।





शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में 'हरिद्वार' से जुड़े शब्द अपने मन से या पाठ से चुनकर लिखिए—



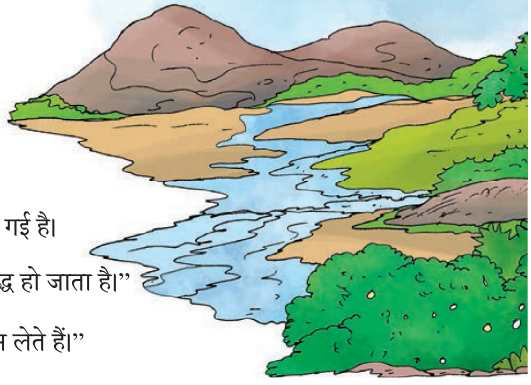
लेखन के अनोखे तरीके

(क) 'हरिद्वार' पाठ में लेखक ने हरिद्वार के अपने अनुभवों को बहुत ही साहित्यिक और कल्पनाशील भाषा में प्रस्तुत किया है जिसमें कई स्थानों पर उन्होंने तुलनात्मक वाक्यों के माध्यम से दृश्यों का वर्णन किया है। जैसे— हरी-भरी लताओं की तुलना सज्जनों से इस प्रकार की गई है—

"पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।"

नीचे कुछ तुलनात्मक वाक्य दिए गए हैं। पाठ में ढूँढ़िए कि इन तुलनात्मक वाक्यों को लेखक ने किस प्रकार विशिष्ट तरीके से लिखा है यानी विशिष्टता प्रदान की है?

1. वृक्षों की तुलना साधुओं से की गई है।
2. गंगाजल की मिठास की तुलना चीनी से की गई है।
3. हरियाली की तुलना गलीचे से की गई है।
4. नदी की धारा की तुलना राजा भगीरथ के यश (कीर्ति) से की गई है।



(ख) "मैं उस पुण्य भूमि का वर्णन करता हूँ जहाँ प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है।"

"पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।"

उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यान से देखिए, ये आज की हिंदी की तरह नहीं लिखी गई हैं। इसे लेखक ने न केवल अपनी शैली में लिखा है, अपितु इसमें प्राचीन हिंदी भाषा की छवि भी दिखाई देती है। नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं आप इन्हें आज की हिंदी में लिखिए।

1. "इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं।"
2. "वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दृष्टि पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी।"

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

3. "यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि इच्छा क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं।"

4. "मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है।"

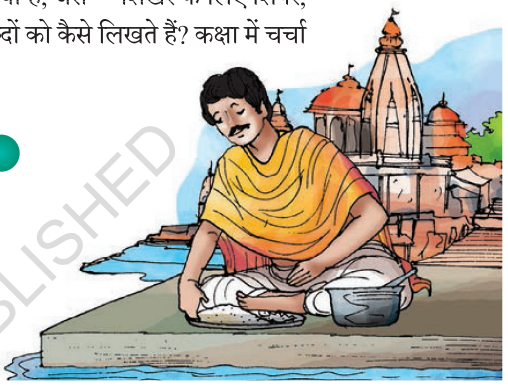
5. "यहाँ रात्रि को ग्रहण हुआ और हम लोगों ने ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया।"

6. "उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।"

7. "निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।"

(ग) इस रचना में हरिश्चंद्र जी ने कहीं-कहीं प्राचीन वर्तनी का प्रयोग किया है, जैसे— शिखर के लिए शिषर, यात्रियों के लिए जात्रियों। ऐसे शब्दों की सूची बनाइए। आप इन शब्दों को कैसे लिखते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।





पाठ से आगे



आपकी बात

1. "मैंने गंगा जी के तट पर रसोई करके... भोजन किया।"

   क्या आपने कभी खुले वातावरण में या प्रकृति के पास भोजन किया है? वह अनुभव घर के खाने से कैसे भिन्न था?

2. "उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।"

   आपके जीवन में ऐसा कोई क्षण आया, जब किसी सामान्य-सी वस्तु ने आपको गहरा सुख दिया हो? उसके बारे में बताइए।

3. "हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।"

   आपको किस स्थान पर पवित्रता और प्रसन्नता का अनुभव होता है? क्या कोई ऐसा स्थान है जहाँ जाते ही मन शांत हो गया हो? उस स्थान की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

4. पाठ में वर्णित है, यहाँ के वृक्ष "फल, फूल, गंध... जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"

   क्या आपके जीवन में कोई पेड़, फूल या प्राकृतिक वस्तु है जिससे आप विशेष जुड़ाव महसूस करते हैं? क्यों?



प्रकृति का सौंदर्य और संरक्षण

"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है..."

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



आपने पत्र में पढ़ा कि हरिद्वार का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है। इस सौंदर्य को बनाए रखने में प्रत्येक मानव की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस विषय में अपने समूह में चर्चा कीजिए। इसके बाद अपने समूह के साथ मिलकर "तीर्थ ही नहीं, पृथ्वी भी पावन हो!" विषय पर जन-जागरूकता पोस्टर बनाइए।

स्वास्थ्य और योग

"चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।"

अनेक लोग आज भी मन की शांति, स्वास्थ्य-लाभ और भक्ति के लिए तीर्थ और पर्वतीय स्थानों की यात्रा करते हैं। मन की शांति और स्वास्थ्य के लिए हमारे देश में हजारों वर्षों से योग भी किया जाता रहा है।

(क) 5 मिनट ध्यान लगाकर या मौन बैठकर अपने आस-पास की ध्वनियों को सुनिए, अपनी श्वास पर ध्यान दीजिए तथा ध्यान को केंद्रित करने का प्रयास कीजिए। इस अनुभव के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

(ख) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अपने विद्यालय के कार्यक्रमों को बताने के लिए एक 'सूचना' लिखिए जिसे सूचना-पट पर लगाया जा सके।



सज्जन वृक्ष

"सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।"

आप जानते ही हैं कि पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। किंतु हमारे ही कार्यों के कारण वे कम होते जा रहे हैं। आइए, पेड़-पौधों को अपना मित्र बनाएँ।

(क) एक पौधा लगाइए और उसकी देखभाल कीजिए ताकि वह कुछ वर्षों में बड़ा पेड़ बन सके। उसे एक नाम दीजिए और उसका मित्र बनिए।

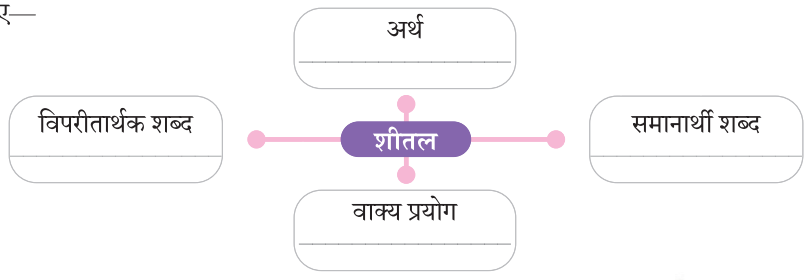
(ख) उसके बारे में अपनी दैनंदिनी में नियमित रूप से लिखिए।



अपने शब्द

"शीतल वायु... स्पर्श ही से पावन करता हुआ संचार करता है।"

आइए, एक रोचक गतिविधि करते हैं। 'शीतल' शब्द को केंद्र में रखिए और उसके चारों ओर ये चार बातें लिखिए—



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अब इसी प्रकार आपके समूह का प्रत्येक सदस्य इस पत्र से एक-एक शब्द चुनकर उसके लिए ऐसा ही शब्द-चित्र बनाए।



यात्रा के व्यय की गणना

इस पत्र में आपने हरिद्वार की एक यात्रा का वर्णन पढ़ा है। मान लीजिए कि आपको अपने मित्रों या अभिभावकों के साथ अपनी रुचि के किसी स्थान की यात्रा करनी है। उस स्थान को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) मान लीजिए कि यात्रा के लिए आपको ₹1000 दिए गए हैं। यात्रा, खाना आदि सब मिलाकर एक व्यय विवरण बनाइए।

(ख) मान लीजिए कि आप इस यात्रा में एक छोटी वस्तु (स्मृति चिह्न) खरीदना चाहते हैं। आप क्या खरीदेंगे और क्यों?
(संकेत — सोचिए, क्या वह आवश्यक है? बजट कैसे संभालेंगे?)



यात्रा सबके लिए

(क) कल्पना कीजिए कि कुछ मित्रों का समूह एक यात्रा पर जा रहा है। आप एक मार्गदर्शक या टूरिस्ट गाइड हैं। आप इन सबकी यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

@KTPS BE REPUBLISHED



उपर्युक्त चित्र में सबकी अलग-अलग आवश्यकताएँ हो सकती हैं। इन्हें ध्यान में रखते हुए सोचिए कि वहाँ पहुँचने, घूमने, भोजन आदि में आप कैसे सहायता करेंगे?

(ख) अपने किसी मित्र के साथ बिना बोले संवाद कीजिए— संकेतों से। अब सोचिए कि यात्रा में श्रवणबाधित व्यक्ति के लिए क्या-क्या आवश्यक होगा?

(ग) यात्रा करते हुए ऐतिहासिक धरोहरों या भवनों की सुरक्षा के लिए आप किन किन बातों का ध्यान रखेंगे?





आज की पहेली

पाठ में से शब्द खोजिए और नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए—

1. एक मसाले का नाम _____
2. कपास से जुड़ा एक शब्द _____
3. जहाँ स्नान होता है _____
4. वृक्ष के किसी अंग का नाम _____
5. एक नगर या तीर्थ का नाम _____
6. व्यापार से जुड़ा स्थान _____
7. एक नदी का नाम _____
8. एक पर्वत का नाम _____
9. एक धार्मिक ग्रंथ का नाम _____

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



झरोखे से

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे एक और पत्र का एक अंश नीचे दिया गया है। इसे पढ़िए और आपस में विचार कीजिए।

हरिद्वार के मार्ग में

हरिद्वार के मार्ग में अनेक प्रकार के वृक्ष और पक्षी देखने में आए। एक पीले रंग का पक्षी छोटा बहुत मनोहर देखा गया। बया एक छोटी चिड़िया है उसके घोंसले बहुत मिले। ये घोंसले सूखे बबूल काँटे के वृक्ष में हैं और एक-एक डाल में लड़ी की भाँति बीस-बीस, तीस-तीस लटकते हैं। इन पक्षियों की शिल्पविद्या तो प्रसिद्ध ही है, लिखने का कुछ काम नहीं है। इसी से इनका सब चातुर्य प्रगट है कि सब वृक्ष छोड़ के काँटे के वृक्ष में घर बनाया है। इसके आगे ज्वालापुर और कनखल और हरिद्वार हैं, जिसका वृत्तांत अगले नंबरों में लिखूँगा।





खोजबीन के लिए

भारतेंदु हरिश्चंद्र का एक प्रसिद्ध नाटक है— अंधेर नगरी। इसे पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

5 कबीर के दोहे*

0871CH05

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप॥
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥
गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥
अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥
ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥
निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥
साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय॥
कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय॥

— *कबीर*

**संदर्भ— कबीर वचनावली, संपादक— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

© KEBS NOT TO BE REPUBLISHED

कवि से परिचय



एक ऐसे संत जो करघे पर कपड़ा और मन में कविता बुनते-बुनते इतने प्रसिद्ध हो गए कि उनकी कविताएँ आज भी लोग भजनों की तरह सुनते हैं और पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाते हैं। माना जाता है कि कबीर का जन्म चौदहवीं शताब्दी में काशी में हुआ था। उनकी रचनाएँ मुख्यत: *कबीर ग्रंथावली* में संगृहीत हैं। आज भी उनकी रचनाएँ हमें जीवन की सच्चाई को समझने और अच्छा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इन दोहों को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय। बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।" इस दोहे में किसके विषय में बताया गया है?

- श्रम का महत्व
- गुरु का महत्व
- ज्ञान का महत्व
- भक्ति का महत्व

(2) "अति का भला न बोलना अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना अति की भली न धूप।।" इस दोहे का मूल संदेश क्या है?

- हमेशा चुप रहने में ही हमारी भलाई है
- बारिश और धूप से बचना चाहिए
- हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है
- हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(3) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर।।" यह दोहा किस जीवन कौशल को विकसित करने पर बल देता है?

- समय का सदुपयोग करना
- दूसरों के काम आना
- परिश्रम और लगन से काम करना
- सभी के प्रति उदार रहना

(4) "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै आपहुँ सीतल होय।।" इस दोहे के अनुसार मधुर वाणी बोलने का सबसे बड़ा लाभ क्या है?

- लोग हमारी प्रशंसा और सम्मान करने लगते हैं
- दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है
- किसी से विवाद होने पर उसमें जीत हासिल होती है
- सुनने वालों का मन इधर-उधर भटकने लगता है

(5) "साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप।।" इस दोहे से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

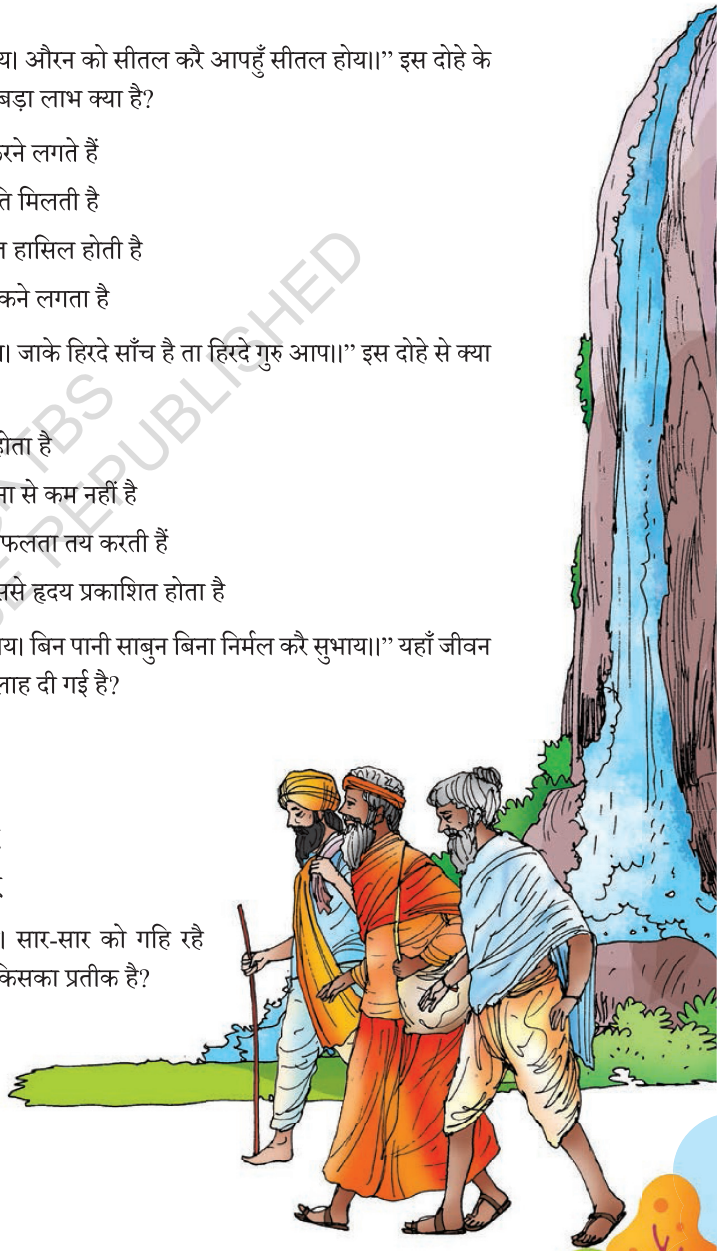
- सत्य और झूठ में कोई अंतर नहीं होता है
- सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है
- बाहरी परिस्थितियाँ ही जीवन में सफलता तय करती हैं
- सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है जिससे हृदय प्रकाशित होता है

(6) "निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय।।" यहाँ जीवन में किस दृष्टिकोण को अपनाने की सलाह दी गई है?

- आलोचना से बचना चाहिए
- आलोचकों को दूर रखना चाहिए
- आलोचकों को पास रखना चाहिए
- आलोचकों की निंदा करनी चाहिए

(7) "साधू ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै थोथा देइ उड़ाय।।" इस दोहे में 'सूप' किसका प्रतीक है?

- मन की कल्पनाओं का
- सुख-सुविधाओं का
- विवेक और सूझबूझ का
- कठोर और क्रोधी स्वभाव का



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

(क) पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें स्तंभ 2 में दिए गए इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।	1.	सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है।
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2.	बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए।
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।	3.	गुरु शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं और शिष्य गुरु का आदर करते हैं।
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4.	मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है।
5.	साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5.	जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है।
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।	6.	हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके।
7.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	7.	विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है।
8.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	8.	आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए। वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



(ख) नीचे स्तंभ 1 में दी गई दोहों की पंक्तियों को स्तंभ 2 में दी गई उपयुक्त पंक्तियों से जोड़िए—

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।	1. बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2. औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।	3. जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप॥
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4. सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय॥
5.	साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5. पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।	6. अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥
7.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	7. जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय॥
8.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	8. बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "कबिरा मन पंछी भया भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय"

(ख) "साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप॥"





सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।" इस दोहे में गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान दिया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

(ख) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।" इस दोहे में कहा गया है कि सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में और कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? अपने विचार साझा कीजिए।

(ग) "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।" क्या आप मानते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

नहीं स्वयं पर भी पड़ता है? आपके बोले गए शब्दों ने आपके या किसी अन्य के स्वभाव या मनोदशा को कैसे परिवर्तित किया? उदाहरण सहित बताइए।

(ङ) "जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय।।" हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण सहित बताइए।



दोहे की रचना



"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

इन दोनों पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों के दो-दो भाग दिखाई दे रहे हैं। इन चारों भागों का पहला शब्द है 'अति'। इस कारण इस दोहे में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न हो गया है। आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी कई विशेषताएँ दिखाई देंगी, जैसे— दोहों की प्रत्येक पंक्ति को बोलने में एक-समान समय लगता है। अपने-अपने समूह में मिलकर पाठ में दिए गए दोहों की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(क) दोहों की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें—

(1) एक ही अक्षर से प्रारंभ होने वाले (जैसे— राजा, रस्सी, रात) दो या दो से अधिक शब्द एक साथ आए हैं।

(2) एक शब्द एक साथ दो बार आया है। (जैसे— बार-बार)

(3) लगभग एक जैसे शब्द, जिनमें केवल एक मात्रा भर का अंतर है (जैसे— जल, जाल) एक ही पंक्ति में आए हैं।

(4) एक ही पंक्ति में विपरीतार्थक शब्दों (जैसे— अच्छा-बुरा) का प्रयोग किया गया है।

(5) किसी की तुलना किसी अन्य से की गई है। (जैसे— दूध जैसा सफेद)

(6) किसी को कोई अन्य नाम दे दिया गया है। (जैसे— मुख चंद्र है)

(7) किसी शब्द की वर्तनी थोड़ी अलग है। (जैसे— 'चुप' के स्थान पर 'चूप')

(8) उदाहरण द्वारा कही गई बात को समझाया गया है।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED





अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।"

- यदि आपके सामने यह स्थिति होती तो आप क्या निर्णय लेते और क्यों?
- यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक न होता तो क्या होता?

(ख) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।"

- यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक बोलता है या बहुत चुप रहता है तो उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
- यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक या कम हो तो क्या परिणाम हो सकते हैं?
- आवश्यकता से अधिक मोबाइल या मल्टीमीडिया का प्रयोग करने से क्या परिणाम हो सकते हैं?

(ग) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।"

- झूठ बोलने पर आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
- कल्पना कीजिए कि आपके शिक्षक ने आपके किसी गलत उत्तर के लिए अंक दे दिए हैं, ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे?

(घ) "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।"

- यदि सभी मनुष्य अपनी वाणी को मधुर और शांति देने वाली बना लें तो लोगों में क्या परिवर्तन आ सकते हैं?
- क्या कोई ऐसी परिस्थिति हो सकती है जहाँ कटु वचन बोलना आवश्यक हो? अनुमान लगाइए।

(ङ) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।"

- यदि कोई व्यक्ति अपने बड़े होने का अहंकार रखता हो तो आप इस दोहे का उपयोग करते हुए उसे 'बड़े होने या संपन्न होने' का क्या अर्थ बताएँगे या समझाएँगे?
- खजूर, नारियल आदि ऊँचे वृक्ष अनुपयोगी नहीं होते हैं। वे किस प्रकार से उपयोगी हो सकते हैं? बताइए।
- आप अपनी कक्षा का कक्षा नायक या नायिका (मॉनीटर) चुनने के लिए किसी विद्यार्थी की किन-किन विशेषताओं पर ध्यान देंगे?

(च) "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।"

- यदि कोई आपकी गलतियों को बताता रहे तो आपको उससे क्या लाभ होगा?
- यदि समाज में कोई भी एक-दूसरे की गलतियाँ न बताए तो क्या होगा?

(छ) "साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।"

- कल्पना कीजिए कि आपके पास 'सूप' जैसी विशेषता है तो आपके जीवन में कौन-कौन से परिवर्तन आएँगे?
- यदि हम बिना सोचे-समझे हर बात को स्वीकार कर लें तो उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

(ज) "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।"

- यदि मन एक पंछी की तरह उड़ सकता तो आप उसे कहाँ ले जाना चाहते और क्यों?
- संगति का हमारे जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ सकता है?

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED





वाद-विवाद



"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

(क) इस दोहे का आज के समय में क्या महत्व है? इसके बारे में कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। एक समूह के साथी इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे और दूसरे समूह के साथी इसके विपक्ष में बोलेंगे। एक तीसरा समूह निर्णायक बन सकता है।

(ख) पक्ष और विपक्ष के समूह अपने-अपने मत के लिए तर्क प्रस्तुत करेंगे, जैसे—

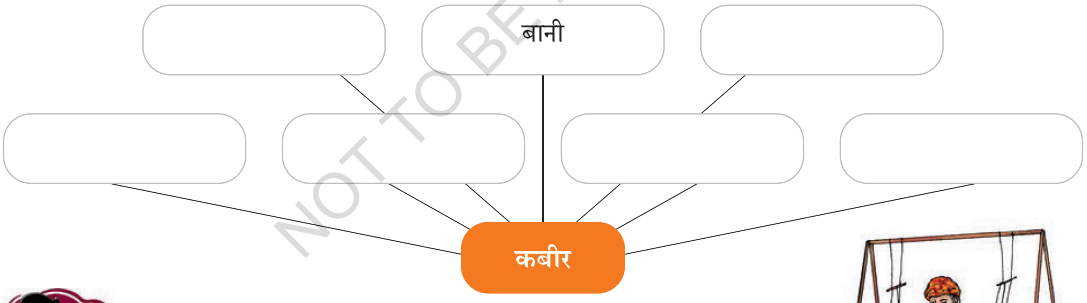
- पक्ष – वाणी पर संयम रखना आवश्यक है।
- विपक्ष – अत्यधिक चुप रहना भी उचित नहीं है।

(ग) पक्ष और विपक्ष में प्रस्तुत तर्कों की सूची अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख लीजिए।



शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में कबीर से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए—





दोहे और कहावतें

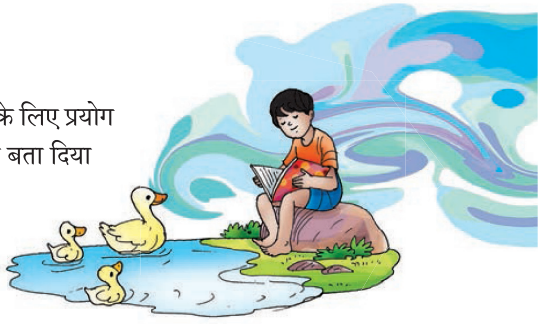


"कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।"

इस दोहे को पढ़कर ऐसा लगता है कि यह बात तो हमने पहले भी अनेक बार सुनी है। यह दोहा इतना अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय है कि इसकी दूसरी पंक्ति लोगों के बीच कहावत— 'जैसा संग वैसा रंग' (व्यक्ति जिस संगति में रहता है, वैसा ही उसका व्यवहार और स्वभाव बन जाता है।) की तरह प्रयुक्त होती है। कहावतें

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

ऐसे वाक्य होते हैं जिन्हें लोग अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। इसमें सामान्यत: जीवन के गहरे अनुभव को सरल और संक्षेप में बता दिया जाता है।



- अब आप ऐसी अन्य कहावतों का प्रयोग करते हुए अपने मन से कुछ वाक्य बनाकर लिखिए।



सबकी प्रस्तुति

पाठ के किसी एक दोहे को चुनकर अपने समूह के साथ मिलकर भिन्न-भिन्न प्रकार से कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए। उदाहरण के लिए—



- गायन करना, जैसे लोकगीत शैली में।
- भाव-नृत्य प्रस्तुति।
- कविता पाठ करना।
- संगीत के साथ प्रस्तुत करना।
- अभिनय करना, जैसे एक दोस्त गुस्से में आकर कुछ गलत कह देता है लेकिन दूसरा दोस्त उसे समझाता है कि मधुर भाषा का कितना प्रभाव पड़ता है। (ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।)

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।" क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने आपको सही दिशा दिखाने में सहायता की हो? उस व्यक्ति के बारे में बताइए।

(ख) "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।" क्या कभी किसी ने आपकी कमियों या गलतियों के विषय में बताया है जिनमें आपको सुधार करने का अवसर मिला हो? उस अनुभव को साझा कीजिए।

(ग) "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।" क्या आपने कभी अनुभव किया है कि आपकी संगति (जैसे— मित्र) आपके विचारों और आदतों या व्यवहारों को प्रभावित करती है? अपने अनुभव साझा कीजिए।



सृजन

(क) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।"

इस दोहे पर आधारित एक कहानी लिखिए जिसमें किसी व्यक्ति ने कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। (संकेत— किसी खेल में आपकी टीम द्वारा नियमों के उल्लंघन का आपके द्वारा विरोध किया जाना।)

(ख) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।"

इस दोहे को ध्यान में रखते हुए अपने किसी प्रेरणादायक शिक्षक से साक्षात्कार कीजिए और उनके योगदान पर एक निबंध लिखिए।



कबीर हमारे समय में

(क) कल्पना कीजिए कि कबीर आज के समय में आ गए हैं। वे आज किन-किन विषयों पर कविता लिख सकते हैं? उन विषयों की सूची बनाइए।

(ख) इन विषयों पर आप भी दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।



साइबर सुरक्षा और दोहे

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में विचार-विमर्श कीजिए और साझा कीजिए—

(क) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूपा।" इंटरनेट पर अनावश्यक सूचनाएँ साझा करने के क्या-क्या संकट हो सकते हैं?

(ख) "साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।" किसी भी वेबसाइट, ईमेल या मीडिया पर उपलब्ध जानकारी को 'सूप' की तरह छानने की आवश्यकता क्यों है? कैसे तय करें कि कौन-सी सूचना उपयोगी है और कौन-सी हानिकारक?



आज के समय में

नीचे कुछ घटनाएँ दी गई हैं। इन्हें पढ़कर आपको कबीर के कौन-से दोहे याद आते हैं? घटनाओं के नीचे दिए गए रिक्त स्थान पर उन दोहों को लिखिए—

अमित का मन पढ़ाई में नहीं लगता था और वह गलत संगति में चला गया। कुछ समय बाद जब उसके अंक कम आए तो उसे समझ में आया — "संगति का असर जीवन पर पड़ता है।"

_____

_____

एक विद्यार्थी इंटरनेट पर लगातार सूचनाएँ खोज रहा था। उसके पिता ने कहा — "हर जानकारी सही नहीं होती, सही बातों को चुनो और बेकार छोड़ दो।"

_____

_____

@KIPS NOT TO BE REPUBLISHED

आपका एक मित्र आपकी किसी गलत बात पर आपकी आलोचना करता है। आप पहले परेशान होते हैं, लेकिन फिर आपने सोचा — "आलोचना मुझे सुधरने का मौका देती है, मुझे इन बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए। इसे सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।"

रीमा ने अपने गुस्से में सहकर्मी को बुरा-भला कह दिया, जिससे वातावरण बिगड़ गया। बाद में उसने समझा कि अगर वह शांति से बात करती तो समस्या हल हो जाती।

कक्षा में मोहन ने बहुत अधिक बोलकर सबको परेशान कर दिया, जबकि रमेश बिल्कुल चुप रहा। गुरुजी ने कहा — "बोलचाल में संतुलन आवश्यक है, न अधिक बोलो, न अधिक चुप रहो।"

सुरेश को जब 'प्रतिभा सम्मान' मिला तो उसने कहा — "इसमें मेरे परिश्रम के साथ मेरे गुरुजनों का मार्गदर्शन भी सम्मिलित है।"

©CTBS NOT TO BE REPUBLISHED



खोजबीन के लिए

अपने परिजनों, मित्रों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता से कबीर के भजनों, गीतों, लोकगीतों को खोजिए और सुनिए। किसी एक गीत को अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए। कक्षा के सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को जोड़कर एक पुस्तिका बनाइए और कक्षा के पुस्तकालय में उसे सम्मिलित कीजिए।

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप कबीर के बारे में और जान-समझ सकते हैं—

- संत कबीर

https://www.youtube.com/watch?v=FGMEpPJJQmk&t=259s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

- कबीर वाणी

https://www.youtube.com/watch?v=UNEIIugmwV0&t=13s&ab_hannel=NCERTOFFICIAL

https://www.youtube.com/watch?v=3QsynIvp62Y&t=8s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

https://www.youtube.com/watch?v=UQA8DdnqiYg&t=11s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

https://www.youtube.com/watch?v=JhWy6BYvosU&t=155s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

https://www.youtube.com/watch?v=gnU7w-RHhyU&t=14s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

- कबीर की साखियाँ

https://www.youtube.com/watch?v=ngF88zXnfQ0&ab_channel=NCERTOFFICIAL

- दोहे कबीर, रहीम, तुलसी

https://www.youtube.com/watch?v=cnrjLCkggr4&t=12s&ab_channel=NCERTOFFICIAL



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पढ़ने के लिए

कदम मिलाकर चलना होगा



बाधाएँ आती हैं आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पाँवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगा कर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा!
कदम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अथ,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न माँगते,
पावस बनकर ढलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

कुश काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुवन,
पर-हित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

— *अटल बिहारी वाजपेयी*

(भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं प्रसिद्ध कवि और लेखक)

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

शब्दकोश



यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं, जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में सहायता करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं. – अंग्रेज़ी	अ. – अव्यय	(अ.) – अरबी	अ.क्रि. – अकर्मक क्रिया
पु. – पुंलिंग	फा. – फारसी	वि. – विशेषण	सं. – संस्कृत
स.क्रि. – सकर्मक क्रिया	सर्व. – सर्वनाम	स्त्री. – स्त्रीलिंग	

@KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

अ

- अंटी [वि.सं. स्त्री.] – धोती की कमर के ऊपर की लपेट, गाँठ
- अकर्मण्य [वि.सं.] – कर्म के अयोग्य, आलसी, निकम्मा, न करने के योग्य
- अखण्ड [वि.सं.] – जिसका सिलसिला न टूटे, अविकल, संपूर्ण, पूरा, अटूट, बाधारहित
- अग्नि [स्त्री.सं.] – आग, उष्णता, प्रकाश, गरमी, जलाने की क्रिया, सोना
- अति [सं.] – अधिकता, सीमोल्लंघन
- अतिथि [पु.सं.] – अचानक आया हुआ मेहमान, वह संन्यासी जो कहीं एक रात से अधिक न ठहरे
- अनगिन [वि.] – अगणित, बेहिसाब, अनगिनत
- अनुपात [पु.सं.] – सापेक्षिक संबंध, अनुसरण, तीन ज्ञात संख्याओं के आधार पर चौथी को निकालना
- अपराध [पु.सं.] – दोष, गलती, पाप, जुर्म, दंड योग्य कर्म
- अप्राप्य [वि.सं.] – न मिलने वाला, अलभ्य
- अर्थी [वि.सं.] –चाह या गरज रखने वाला, धनी, प्रार्थी, वादी, सेवा करने वाला

- अवरोहण [पु.सं.] – उतरना, नीचे आने की क्रिया
- अवाक [वि.सं.] – स्तब्ध, मौन, चुप, दक्षिण की ओर, अधोमुख
- अविश्वास [पु.सं.] – विश्वास का न होना, शंका, संदेह
- अहं [पु.]– गर्व, घमंड, 'अहम' का समासगत रूप
- अहाता [पु.(अ.)] – घेरा, चहारदीवारी से घेरी हुई जगह, सूबा, प्रेसिडेंसी

आ

- आँगन [पु.] – चौक, घर के भीतर का सहन
- आंतरिक [वि.सं.] – भीतरी, जिसका संबंध भीतरी बातों से हो, हार्दिक
- आगंतुक [वि.सं.] – बिना बुलाए आने वाला, अचानक आने या होने वाला, अजनबी
- आदर्श [पु.सं.] – नमूना, असल, व्याख्या, आईना, शीशा, मूल लेख
- आपा [पु.] – सुध-बुध, अहंकार, अपना स्वरूप, गर्व, सत्ता
- आरोहण [पु.सं.] – चढ़ना, सवार होना, ऊपर को जाना, सीढ़ी, अँखुवा फूटना, नृत्य आदि के लिए बना हुआ मंच

ई

- ईर्ष्या [स्त्री.सं.] – जलन, डाह, दूसरों की बढ़ती न देख सकना

उ

- उत्तराधिकारी [वि.सं.] – किसी के बाद उसकी संपत्ति पाने का हकदार, वारिस
- उत्स [पु.सं.] – सोता, स्रोत, जलमय स्थान
- उद्धार [पु.सं.] – मुक्ति, बाहर निकालना (विपत्ति, दुर्दशा आदि से), ऊपर उठाना, छुटकारा
- उपभोग [पु.सं.] – भोगना, फलभोग, सुख, स्वाद लेना, व्यवहार

औ

- औरन / और [अ.वि.] – दूसरा, अधिक

क

- कदाचित [अ.सं.] – कभी, शायद
- कन [पु.] – कण, बूँद, संक्षिप्त रूप

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

- कल्लोल [पु.सं.] – कुछ ऊँची और आवाज करने वाली लहर, मौज, आनंद, क्रीड़ा
- कसरत [स्त्री.(अ.)] – शरीर को पुष्ट एवं बलवान बनाने वाली क्रियाएँ, व्यायाम, वर्जिश, बहुलता
- कालीन [पु.(अ.)] – गलीचा, सूत या ऊन के धागे से बना हुआ बिछौना
- किरण [स्त्री.सं.] – रश्मि, ज्योति से प्रवाह रूप में निकलने वाली रेखा, अंशु, धूलिकण, सूर्य
- कुटी [स्त्री.सं.] – झोपड़ी, कुटिया, मोड़, घुमाव
- कुशा [स्त्री.सं.] – रस्सी, कड़ी और नुकीली पत्तियों वाली एक घास जो यज्ञ, पूजन आदि धर्म कृत्यों की आवश्यक सामग्री है।

ख

- खजाना [पु.फा.] – भंडार, कोश, राजस्व, रूपया, सोना-चाँदी रखने का स्थान
- ख़ाक [स्त्री.फा.] – धूल, मिट्टी, कुछ नहीं, तुच्छ, छोटा
- खाट [स्त्री.] – चारपाई, खटिया
- खानि [स्त्री.सं.] – खान, स्रोत, भंडार, वह जगह जहाँ से धातु कोयला आदि खोदकर या पत्थर की सिलें तोड़कर निकाली जाए
- खीझ [स्त्री.] – खीझने का भाव, झुंझलाहट, कुढ़न, गुस्सा
- खोय (खोना) [स.क्रि.] – गँवाना, अपनी चीज कहीं भूल या छोड़ आना

@KIDS NOT TO BE REPUBLISHED

ग

- गज [पु.फा.] – लंबाई का एक मान, 36 इंच
- गण्य [वि.सं.] – गणनीय – गिनने लायक, मान्य, लिहाज करने योग्य
- गति [स्त्री.सं.] – चाल, गमन, रफ्तार, हरकत, प्रवेश, जाना, दशा, हालत
- गर्वित [वि.सं.] – गर्वयुक्त, घमंडी
- गुमसुम [वि.] – चुप और निश्चेष्ट, स्तब्ध होना
- गोविंद [पु.सं] – गोपालक, कृष्ण, बृहस्पति

घ

- घाटी [स्त्री.] – दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन, पहाड़ का ढाल, मैदान, दर्रा
- घृणा [स्त्री.सं.] – घिन, नफरत, दया, करुणा

च

- चर्राना [अ.क्रि.] – खाल में खुश्की से तनाव या हलका दर्द होना, चर-चर करके टूटना, प्रबल इच्छा होना

- चुग्गा [पु.] – चिड़ियों के चुगने के लिए डाली गई चीज, वह चारा जो चिड़िया चोंच से उठाकर बच्चे के मुँह में दे
- चुटीला [वि.] – जो चोट खाए हो, चोट करने वाला, जख्मी, चोटी का या सबसे बढ़िया

छ

- छज्जा [पु.] – छत का दीवार के बाहर निकला हुआ भाग, बारजा, धूप से बचने के लिए
- छावनी [स्त्री.] – वह स्थान जहाँ सेना रखी जाए, शिविर, पड़ाव

ज

- ज़माना [पु.(अ.)] – काल, युग, अरसा, अवधि, बहुत समय, दुनिया, संसार
- ज़मींदार [पु.फा.] – जमीन का मालिक, किसान, काश्तकार
- जावित्री [स्त्री.] – जायफल का छिलका जो मसाले और दवा के रूप में काम में लाया जाता है।
- जोश [पु.फा.] – उत्साह, आवेश, उबाल, उफान, गरमी

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

झ

- झलना [स.क्रि.] – पंखा आदि हिलाकर हवा करना, हवा करने के लिए हिलाना
- झालर [स्त्री.] – लटकने वाला हासिया, किनारा, एक तरह का घंटा या घड़ियाल

ट

- टोकरी [स्त्री.] – घास, फल, तरकारी आदि रखने का बाँस या झाऊ आदि का बना गोला, गहरा पात्र, खँचिया

ठ

- ठिठक [अ.क्रि.] – चलते-चलते सहसा रुक जाना, बिल्कुल स्थिर हो जाना
- ठूँसना [स.क्रि.] – दबा-दबाकर भरना, कसकर रखना

ड

- डेरा [पु.] – टिकाव, पड़ाव, ठहरने के लिए, फैलाया हुआ सामान, रहने की जगह, घर, मकान
- डैना [पु.] – पंख, पर, नाव खेने का डंडा

त

- तकलीफ [स्त्री.(अ.)] – दुःख, कष्ट, क्लेश
- तज– दारचीनी की जाति का एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम आती है (इसके पत्ते को तेजपत्ता कहते हैं)
- तप [पु.सं.] – तपस्या, ताप, दाह, सूर्य, ग्रीष्म ऋतु
- तर [वि.फा.] – ठंढा, ठंढक पैदा करने वाला, आर्द्र, अत्यंत शिक्त
- तरुण [वि.सं.] – युवा, सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्था वाला
- तहवाँ [अ.] – वहाँ
- तार [पु.] – वह तार जिसके द्वारा बिजली की शक्ति से समाचार भेजे जाते हैं, तार द्वारा भेजी हुई खबर
- तुनककर/तुनकना [अ.क्रि.] – छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ जाना

त्र

- त्रिभुवन [पु.सं.] – स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल – इन तीनों भुवनों का समाहार

थ

- थिगली [स्त्री.] – छेद बंद करने के लिए टाँका गया कपड़े, पैबंद, चमड़े आदि का टुकड़ा, चकती
- थोथा [वि.] – भीतर से खाली, खोखला, निकम्मा, निःसार

द

- दक्ष [वि.सं.] – निपुण, कुशल, माहिर, जिसमें किसी विषय को तत्काल समझने तथा कोई कार्य शीघ्र करने की शक्ति हो
- दालचीनी [स्त्री.] – दारचीनी, एक प्रकार का तज जिसका छिलका दवा और मसाले के काम आता है।
- दीप्ति [स्त्री.सं.] – चमक, कांति, प्रभा, ज्ञान का प्रकाश, छटा, ज्ञान की अभिव्यक्ति
- दोऊ [वि.] – दोनों

ध

- धन-मद [वि.पु.] – धन का गर्व
- धमा-चौकड़ी [स्त्री.] – उछल-कूद, कूद-फाँद, ऊधम
- धर्मशाला [स्त्री.सं.] – वह स्थान जहाँ धर्मार्थ अन्नादि बँटता हो, यात्रियों के लिए निःशुल्क ठहरने के लिए बनवाया हुआ स्थान
- धूम [पु.सं.] – धुआँ, कुहरा, बादल, मकान बनाने के लिए तैयार किया गया स्थान

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

न

- नकद [पु.(अ.)] – वह धन जो सिक्कों के रूप में हो, वह रकम जो फौरन अदा की जाए
- नक्षत्र [पु.सं.] – तारा, अश्वनी, रोहिणी, चित्रा, स्वाती, विशाखा
- नगर [पु.सं.] – शहर, कस्बे से बड़ी और समृद्ध बस्ती जिसमें अनेक जातियों और पेशों के लोग बसते हों
- नभ [पु.सं.] – आकाश, सावन का महीना
- निंदक [वि.सं] – निंदा, बदगोई करने वाला, किसी के दोष का वर्णन करने वाला
- नियरे [अ.] – निकट, पास
- निरीक्षण [पु.सं.] – गौर से देखना, जाँच करना, देखरेख करना, आशा
- निर्झर [पु.सं.] – झरना, प्रपात, हाथी, भूसी की आग
- निर्दयी [वि.सं.] – दयारहित, निष्ठुर, कठोर हृदय वाला, प्रचंड, उग्र
- निर्मल [वि.सं.] – स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र, दोषों से रहित
- निष्फल [वि.सं.] – जिससे कुछ अर्थ न सिद्ध हो, बेकार, जिसका कुछ फल ना हो
- नुक्कड़ [पु.] – मोड़, छोर, निकला हुआ कोना, नाका, नोंक
- नेपथ्य [पु.सं.] – रंगमंच के परदे के पीछे की वह जगह जहाँ कलाकार की वेश रचना की जाती है, वेश-भूषा

प

- पंडे/पंडा [पु.] – तीर्थ, मंदिर या घाट पर धर्मकृत्य कराने वाला, तीर्थ का पुजारी, रसोइया
- पंथी [पु.] – यात्री, बटोही, किसी मत को मानने वाला
- पना [पु.] – पन्ना, अपने से पके या आग में पकाए हुए आम, इमली आदि के रस या गूदे से तैयार किया जाने वाला एक प्रकार का पेय पदार्थ
- परमानंद [पु.सं.] – उत्तम आनंद, उत्तम आनंदरूप परमात्मा
- परवाना [पु.फा.] – पतिंगा, पंखी, आज्ञापत्र, नियुक्तिपत्र
- परिधि [स्त्री.सं.] – लकड़ी आदि का घेरा या बाड़ा, परिवेश, वृत्त बनाने वाली गोल रेखा, पहिये का घेरा
- पलंग [पु.] – बड़ी और बढ़िया चारपाई, अधिक लंबी-चौड़ी और सुंदर चारपाई
- पश्चाताप [अ.सं.] – पछतावा, कोई अनुचित कार्य करने के बाद में उसके लिए दु:खी होना
- पसीजा– पसीजना [अ.क्रि.] – दया से आर्द्र होना, खिन्न होना
- पाँय [पु.] – पैर, चरण
- पाट [पु.सं.] – विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, रेशम, वस्त्र, सिंहासन, पत्थर की पटिया, पीढ़ा, चक्की के दो भागों में से कोई एक
- पार – किसी वस्तु का दूसरा किनारा, अंत, हद, पारा
- पारायण [पु.सं.] – किसी ग्रंथ का आदि से अंत [आद्यंत] पाठ, संपूर्णता, पार जाना
- पावन [वि.सं] – पवित्र, शुद्ध, शुद्ध करने वाला
- प्रबंध [पु.सं.] – व्यवस्था, आयोजन, ग्रंथ, कथा आदि की रचना
- प्रेरणा [स्त्री.सं.] – किसी को किसी कार्य में प्रकृत करने की क्रिया, उकसाने की क्रिया, फेंकना, भेजना

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

फ

- फाहा [पु.] – घी आदि में तर की हुई रुई या कपड़ा, मरहम चुपड़ी हुई पट्टी, इत्र

ब

- बंधु – भाई, मित्र, स्वजन, आत्मीय
- बखेड़ा [पु.] – झंझट, झगड़ा, परेशानी, टंटा, कठिनाई
- बधिक [पु.] – बहेलिया, व्याध, वध करने वाला, जल्लाद
- बर्रे [पु.] – ततैया, भिड़, सरसों के आकार का एक काँटेदार पौधा जिसमें केसरिया रंग के फूल लगते हैं और बीज तेलहन के काम आता है
- बलिहारी [स्त्री.] – निछावर होना, कुर्बान जाना
- बहुतेरा [वि.] – बहुत-सा, अनेक
- बानी–वाणी [स्त्री.सं.] – वचन, सार्थक शब्द, स्वर, जीभ, प्रशंसा
- बिछायत [स्त्री.] – बिछाने की चीज, बिछावन, बिछौना
- ब्रह्मांड [पु.सं.] – विश्व गोलक, सम्पूर्ण विश्व, खोपड़ी

भ

- भट्टी [स्त्री.] – खास कामों के लिए बना हुआ बड़ा चूल्हा
- भाड़ [पु.] – भड़ भूँजे की भट्टी जिसमें बालू गरम कर वह दाना भूनता है
- भावना [स्त्री.सं.] – चिंतन, खयाल, कल्पना, इच्छा, ध्यान, स्मरण, उत्पादन
- भावै [अ.] – मन में आए, जी चाहे तो
- भू [स्त्री.सं.] – भूमि, धरती, जमीन, स्थान, पदार्थ, एक का संकेत
- भोगी [वि.सं.] – भोग करने वाला, भोग-विलास में रत, कुंडलीयुक्त

म

- मचलना [अ.क्रि.] – किसी चीज को लेने या देने का हठ पकड़ लेना, किसी चीज के लिए रोना-धोना
- मठ [पु.सं.] – साधु-संन्यासियों के रहने का स्थान, आश्रम, देवालय
- मनोरथ [पु.सं.] – मनोर्थ, मन की कामना, अभिलाषा
- मर्यादा [स्त्री.सं.] – सीमा, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा, अवधि, नदी, समुद्र का किनारा, सदाचार, प्रतिष्ठा
- मलमल [स्त्री.] – भारत का एक बारीक, सफेद सूती कपड़ा जो बहुत पुराने जमाने से प्रसिद्ध था
- मिष्ट [वि.सं] – मीठा, स्वादिष्ट, तर, मिठास, मिठाई
- मुक्त [वि.सं.] – बंधन रहित, खुला हुआ, मोक्ष प्राप्त, छूटा हुआ, फेंका हुआ
- मेघ [पु.सं.] – बादल, बरसने वाला बादल, समूह, छः मुख्य रागों में से एक, मोथा

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

र

- रूठना [अ.क्रि.] – नाराज होना, अप्रसन्न

ल

- लज्जित [वि.सं.] – शर्मिंदा, लज्जायुक्त, लजाया हुआ
- लासानी [स्त्री. वि.] – बेजोड़, जिसका सानी न हो
- लीन [वि.सं.] – विलीन, ध्यानमग्न, तन्मय, तत्पर, छिपा हुआ, पिघला हुआ

व

- वल्ली [स्त्री.सं.] – लता, बेल, जमीन या किसी आधार पर फैलने वाला पौधा
- विचरण [पु.सं.] – घूमना-फिरना, भ्रमण करना, पर्यटन, चलना
- विजातीय [वि.सं.] – भिन्न जाति, दूसरी जाति का, वर्ग का
- विदित [पु.सं.] – अवगत, जाना हुआ, स्वीकृत, सूचना, विद्वान, कवि, प्रसिद्धि, लाभ, प्राप्ति
- विमुख [वि.सं.] – वंचित, हताश, मुखहीन, विरत, उदासीन, बहिर्मुख
- विराट [वि.सं.] – बहुत बड़ा, विश्व, ब्रह्मा, मत्स्य देश का राजा
- विलक्षण [वि.सं.] – असाधारण, अलौकिक, भिन्न चिह्नों वाला
- वृद्धाकाल [पु.वि.सं.] – बुढ़ापा
- वैद्य [वि.सं.] – आयुर्वेद का ज्ञाता, चिकित्सक, विद्वान, वेद-संबंधी
- वैराग्य [पु.सं.] – विषयवासना और संसारिक संबंधों से मन उचट जाना, उदासीनता, रंग बदलना

श

- शंख [पु.वि.] – सौ पद्म की संख्या, सौ पद्म, समुद्र में पैदा होने वाले एक जंतु का खोल या घर जो पत्थर-सा कड़ा और सफेद होता है
- शिखर [पु.सं.] – पर्वताग्र, पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग, मकान का सबसे ऊँचा हिस्सा, मुड़ेर, कलश, गुंबद, वृक्षों का सबसे ऊँचा हिस्सा
- शिल्प [पु.सं.] – कारीगरी, दक्षता, हुनर, हस्तकर्म, रूप, आकृति, निर्माण, सृष्टि, अनुष्ठान

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

स

- संख्यातीत [वि.सं.] – अगणित, बेशुमार
- संग [पु.सं.] – साथ, साथ होना, योग, मिलन
- संगति [स्त्री.सं.] – मिलन, योग सभा, समाज, साथ, मोक्ष
- संदूक [पु.(अ.)] – लकड़ी या लोहे का बकस जो कपड़े आदि रखने के काम आता है
- संस्कृति [स्त्री.] – आचरणगत परंपरा, सभ्यता का वह स्वरूप जो आध्यात्मिक एवं मानसिक वैशिष्टय का द्योतक होता है, सजावट
- सकपकाकर [स्त्री.] – हिचककर, घबराकर
- सराय [स्त्री.फा.] – धर्मशाला, मुसाफिरखाना, घर, जमीन के नीचे का तल
- सर्वांगीण [वि.सं.] – सब वेदांगों से संबंध रखने वाला, सब अंगों में व्याप्त होने वाला
- सर्वोपरि [अ.सं.] – सबसे ऊपर या बढ़कर
- सलवट [स्त्री.] – सिलवट, शिकन, सिकुड़न
- साँच [वि.] – सच्ची बात, सत्य, ठीक
- साधू [पु.वि.सं.] – सच्चा या नेक आदमी, संत, मुनि, सदाचारी
- सार [पु.वि.सं.] – सारांश, यथार्थ बात, मूल भाग
- सीतल/शीतल [वि.सं] – ठंढा, शांत, संतुष्ट, आनंदित, मृदु, सौम्य
- सुकुमार [वि.सं.] – कोमल, बहुत नाजुक, साँवा, ईख का एक भेद
- सुभाय [पु.] – स्वभाव, आदत, अपनी अवस्था, मिजाज, सहज प्रकृति
- सूप [पु.]– अनाज पछोरने का बाँस के छिलके या सींक आदि का बना हुआ पात्र, छाज
- सृष्टि [स्त्री.सं.] – जगत, संसार, परित्याग, निर्माण, निर्मित
- सौरभ [पु.वि.सं.] – खुशबूदार, सुगंधित, आम, धनिया, केसर
- स्वप्न [पु.सं.] – सपना, ख्वाब, ऊँची कल्पना, निद्रा, कोई महत्वपूर्ण कार्य करने का विचार
- स्वाधीन [वि.सं.] – स्वतंत्र, स्वच्छंद, जो अपने ही अधीन हो, दूसरे के नहीं, आजाद
- स्वार्थ [पु.सं.] – अपना मतलब, अपना धन, अपना लाभ, गरज, प्रयोजन

ह

- हर्ज [पु.(अ.)] – हरज, हानि, क्षति, काम में होने वाली रुकावट, देर, समय-नाश

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
औ	ं	ः							
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ				
ड़	ढ़	ऽ	़	◌	ँ	ॄ	ऑ		

१	२	३	४	५
६	७	८	९	०

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पहेलियों के उत्तर

पाठ संख्या			
4.	हरिद्वार	आज की पहेली	1. दालचीनी / जावित्री
			2. जनेऊ (जिसे सामान्यतः सूती धागे से बनाया जाता है)
			3. हरि की पैरी, घाट
			4. फल, फूल, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़ (कोई भी एक)
			5. कनखल, हरिद्वार आदि।
			6. दुकान
			7. गंगा
			8. विल्व पर्वत
			9. श्री भागवत

@KTES NOT TO BE REPUBLISHED

पढ़ने के लिए

निराला की इस संगीतात्मक कविता को पढ़कर आनंद लीजिए। विस्तार से इस कविता को आप आगे की कक्षा में पढ़ेंगे—



भारति, जय, विजय करे!

भारति, जय, विजय करे!
कनक-शस्य-कमल धरे!

लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता-शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे।

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED